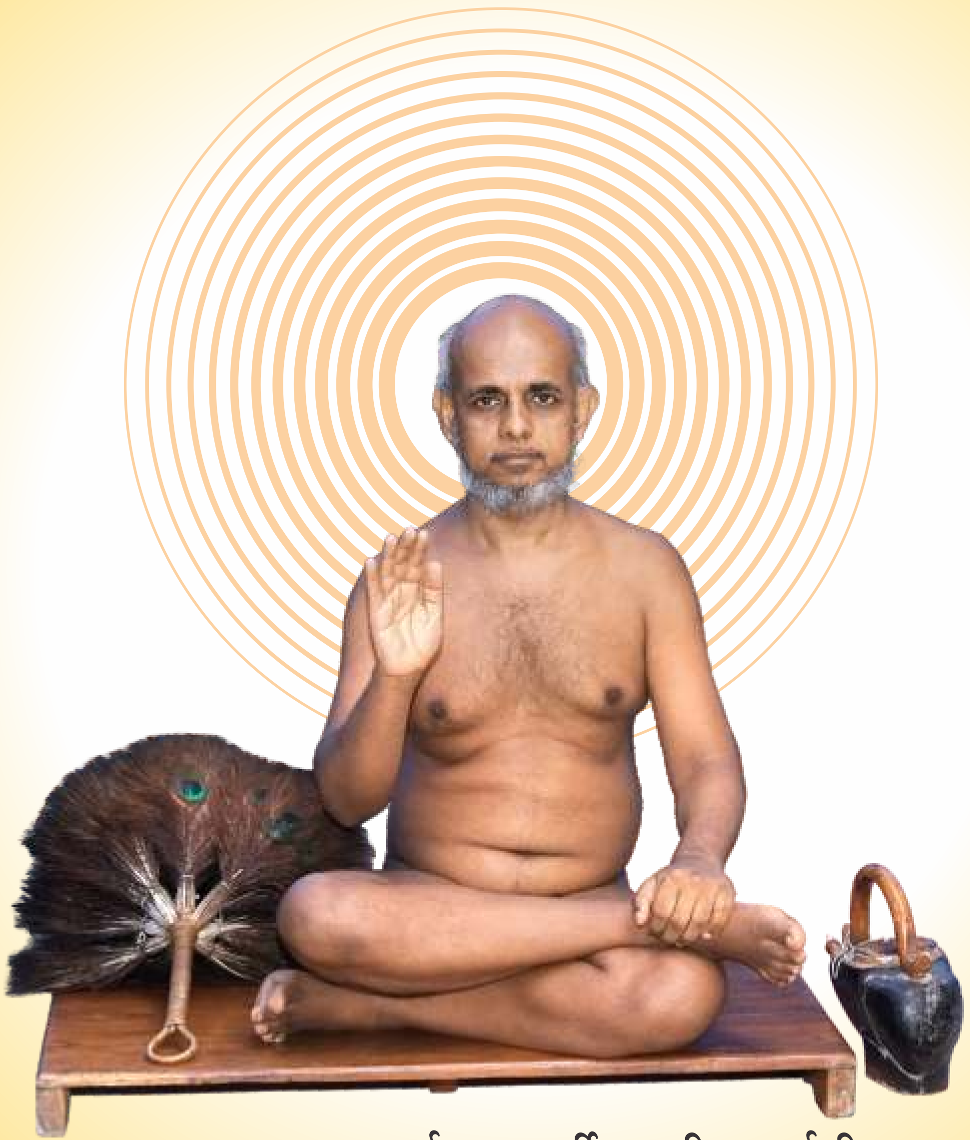

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

श्री णमोकार महामंत्र विधान
श्री पंचमेरु महामण्डल विधान
एवं
श्री लघु नन्दीश्वर विधान पूजन
श्री णमोकार महामंत्र विधान का माण्डना

कृतिकार : परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्तिस्थान
विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला, जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

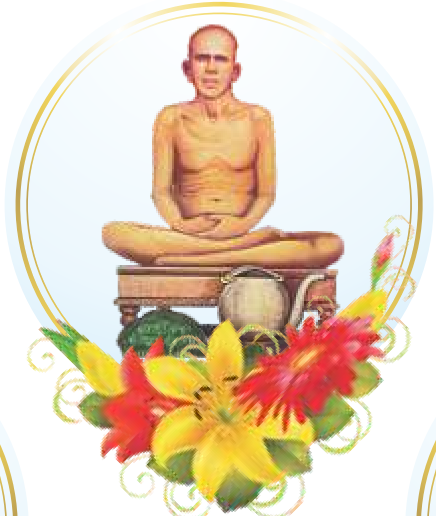

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

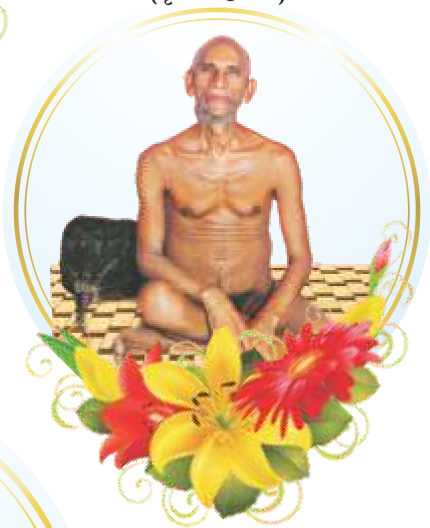

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

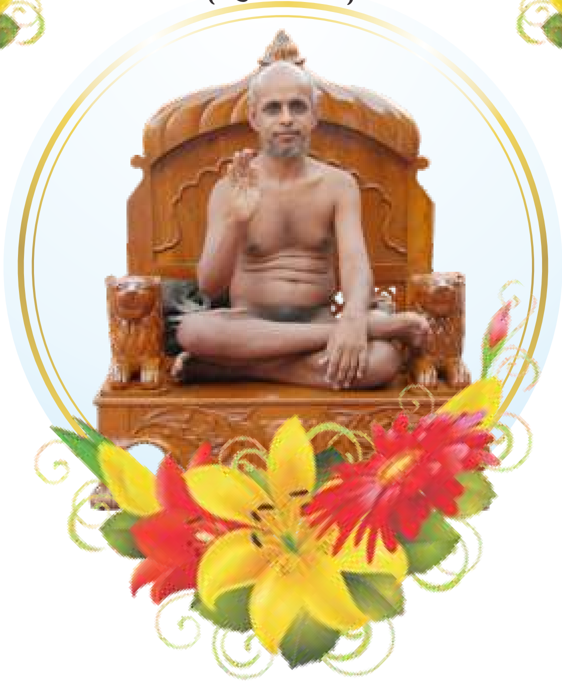

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

श्री णमोकार महामंत्र विधान
श्री पञ्चमेरु महामण्डल विधान
एवं
श्री लघु नन्दीश्वर विधान पूजन

श्री णमोकार महामंत्र विधान का माण्डना

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति – श्री णमोकार महामंत्र विधान, श्री पञ्चमेरु महामण्डल विधान एवं श्री लघु नन्दीश्वर विधान पूजन

कृतिकार – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति **आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**

संस्करण – प्रथम, 2010 प्रतियाँ – 1000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग – क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज
ब्र. लालजी भैया, सुखनन्दनजी भैया

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था, सपना दीदी

संयोजन – ब्र. करण, आरती दीदी ● मो.: 9829127533

प्राप्ति स्थल –
1. निर्मलकुमार गोधा
जैन सरोवर समिति
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो.: 9414812008
फोन : 0141–2319907 (घर)
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला–सागर (म.प्र.)
फोन : 07581–274244
3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस,
मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर
फोन : 2503253, मो.: 9414054624
4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए–107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566

पुनः प्रकाशन हेतु – 51/- रु.

अर्थ सौजन्य :- श्री दिगम्बर जैन पाठशाला नसियाँजी कोटा (राज.)

मुद्रक : **राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह)**, जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

सुमन आराधना के

मंत्रराज नवकार का, जप तप ध्यान करें।
पैंतिस अक्षर प्राप्त कर, मुक्ति धाम वरें।।
आदि अन्त है न कहीं, ये है मंत्र महान्।
णमोकार में पञ्च गुरु, को शत बार प्रणाम।।

अनादिकाल से यह जीव राग-द्वेष, मिथ्यात्व के वशीभूत हो खोटे मंत्रों की आराधना कर इस अनादि संसार में भटक रहा है। ऐसे इन भटके-अटके हुए प्राणियों को इस अनादि संसार से छुटकारा पाने के लिए मात्र णमोकार मंत्र ही एक ऐसा मंत्र है। जिसकी आराधना कर प्राणी सांसारिक सुखों के साथ मोक्ष सुख को भी प्राप्त कर सकता है।

णमोकार मंत्र एक ऐसा मंत्र है जिसमें पाँच पद पैंतिस अक्षर अट्ठावन मात्राएँ हैं आगम में इस अनादि निधन मंत्र से 8400000 (लाख) मंत्रों का उद्भव बताया गया है। इस मंत्र को जिस जीव ने चाहे वह किसी भी गति का हो मन-वचन-काय त्रय योग से श्रद्धा से पढ़ा या स्मरण ही किया, उसने सांसारिक सिद्धि के साथ-साथ आत्मा से परमात्म पद को भी प्राप्त कर लिया है।

इन्हीं पाँच पदों में स्थित परमेष्ठी की भक्ति, आराधना हेतु हमें **परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागरजी महाराज** ने बीजाक्षरों के द्वारा जो सुबोध भाषा हमें इस **'णमोकार मण्डल विधान'** के रूप में तैयार की है। परमात्मा की भक्ति का इतना सरल आलम्बन प्राप्त कर हम अति हर्षित हैं तथा गुरुदेव के चरणों में ऐसी भक्ति से ओत-प्रोत छन्द प्रदान करने के लिए त्रय बार नमन् और वन्दन करती हूँ। साथ ही **'पंचमेरु एवं लघु नन्दीश्वर विधान'** की भी रचना कर भव्य जीवों के कल्याण हेतु प्रदान की है।

यह पञ्च नमस्कार मंत्र अनादिकालीन लगे हुए सभी पापों का नाश करने वाला है और सभी मंगलों में पहला मंगल मङ्ग शब्द का अर्थ पुण्य को लाने वाला अतः सभी प्रकार के पापों को छोड़कर पुण्य कराने वाला यह नमस्कार मंत्र है। इस मंत्र की बीजाक्षरों के द्वारा पूजा, आराधना कर सभी प्राणी असीम पुण्य का संचय कर सच्चे सुख को प्राप्त करें यही मेरी भावना है।

- ब्रह्मचारिणी ज्योति दीदी

णमोकार मंत्र की महिमा

एक बार कुमार पार्श्वनाथ वन-भ्रमण करने के लिए गए। एक स्थान पर उन्होंने पाँच-सात पाखण्डी साधुओं को हवन करते हुए देखा। जैसे ही पार्श्वकुमार की दृष्टि हवन कुंड में लकड़ी पर पड़ी तो वे अपने अवधिज्ञान से जान गए कि लकड़ी के अंदर नाग और नागिन हैं। वे तुरन्त पाखण्डी साधु के पास गए और बोलेह्नह्नहे तापस ! इस लकड़ी को तुमने हवन-कुंड में क्यों डाला? देखो इसे, इसमें नाग और नागिन जल रहे हैं?

पाखण्डी साधु ने कहाह्नह्नरे बालक ! तू झूठ बोल रहा है। इसमें नाग और नागिन नहीं जल रहे हैं। पार्श्वकुमार ने कहाह्नह्नयदि तुम्हें विश्वास नहीं हो तो उस लकड़ी को निकालो और चीर कर देखो।

साधुओं ने लकड़ी निकाली और लकड़ी को चीरना प्रारम्भ किया। जैसे ही लकड़ी को चीरा वैसे ही उसमें से अधजले तड़पते नाग और नागिन निकले। तड़पते नाग-नागिन को देखकर पार्श्वकुमार ने उनको णमोकार मंत्र सुनाया। दोनों ने भावों से णमोकार मंत्र सुना और मरण को प्राप्त हो गए।

मरण के बाद नाग और नागिन धरणेन्द्र और पद्मावती नाम के देव और देवी हुए।

(1) जीवन्धर ने मरते समय कुत्ते को 'णमोकार मंत्र' सुनाया था जिससे स्वर्ग गया था। (2) चारुदत्त ने बकरे को मरते समय 'णमोकार मंत्र' सुनाया था तो वह स्वर्ग का देव बना। (3) वृषभदत्त सेठ ने बैल को 'णमोकार मंत्र' सुनाया था तो वह मरकर सुग्रीव के रूप में राजा बना था। (4) तोते को णमोकार मंत्र रत्नमाला ने सुनाया था तो वह मरकर देव बना था। (5) हाथी।

णमोकार मंत्र के व्रत की विधि :- आषाढ़ सुदी सप्तमी से प्रारम्भ कर क्रमशः 7 सप्तमी, कार्तिक वदी पञ्चमी से क्रमशः 5 पञ्चमी, पौष सुदी चतुर्दशी से क्रमशः 14 चतुर्दशी और श्रावण सुदी नौमी से क्रमशः 9 नौमी के व्रत करने पर णमोकार मंत्र में वर्णित 35 अक्षर के 35 व्रत पूर्ण करना चाहिए।

यदि क्रमशः तिथि से व्रत करने में अनुकूलता न हो तो अपनी सुविधानुसार उक्त तिथियों के व्रत पूर्ण करना चाहिए।

lr Xod-emó-Jwé g_wÀM` nyOZ

स्थापना

देव शास्त्र गुरु के चरणों हम, सादर शीष झुकाते हैं।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में वश एक सहारा है।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! शरण में आये हैं, भव के सन्ताप सताए हैं।
यह परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधी प्रदान करो।
यह अक्षत लाए चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
अब काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट पूर्ण न कर पाये।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।
अब विशद मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु वन्दना, करते बारम्बार।
जलधारा कर पूजते, पाने मुक्ति द्वार।। *शान्तये शांतिधारा..*
देव-शास्त्र-गुरु के चरण, होकर के निष्काम।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, करते विशद प्रणाम।। *पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।*

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थ अनन्त।।

छन्द तोटक

जय अरि नाशक अरिहंत जिनं, श्री जिनवर छियालिस मूल गुणं।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं।।
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं।।1 ।।
जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं।।
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भावन व्यन्तर ज्योतिषेव।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव।।2।।
श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी।।
है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।
जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल।। 3।।
जय रत्नत्रय युत गुरूवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं।
जय गुप्ति समीति शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं।।
गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग-जन के उपकारी हो।
गुरु आतम ब्रह्म बिहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो।।4।।

जय सर्व कर्म विध्वंस करं, जय सिद्ध शिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो कर्महनं।।
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं।।5।।
जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदी ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं।।
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द्र सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें।।6।।
जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी।।
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनका यश मंगल गावत हैं।।7।।

(आर्या छन्द)

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरू जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक तिहुँ काल के, नमू सर्व अरहंत।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यशुभ, चैत्यालय मनहार।
शत इन्द्रों से पूज्य हैं, हम पूजें शुभकार।।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पांजलिं क्षिपेत् (कायोत्सर्गं कुरु...)

पंच नमस्कार मंत्रः

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं।।1।।

मन्त्रं संसारसारं, त्रिजगदनुपमं सर्वपापारिमन्त्रम्।
संसारोच्छेदमन्त्रं, विषमविषहरं कर्मनिर्मूलमन्त्रम्।।
मन्त्रं सिद्धि प्रदानं, शिवसुखजननं केवलज्ञानमन्त्रम्।
मन्त्रं श्री जैनमन्त्रं, जपतप जपितं जन्म निर्वाण मन्त्रम्।।2।।

आकृष्टिं सुरसंपदां विदधते, मुक्तिश्रियोवश्यतां।
मुच्चाटं विपदां चतुर्गतिभुवां, विद्वेषमात्मैनसाम्।।
स्तम्भं दुर्गमनं प्रति, प्रयततो मोहस्य संमोहनम्।
पायात्पञ्चनमस्क्रियाक्षरमयी साराधना देवता।।3।।

अनन्तानन्त - संसार - सन्ततिच्छेद - कारण्।
जिनराजपदाम्भोजस्मरणं शरणं मम।।4।।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर।।5।।

नहि त्राता नहि त्राता, नहि त्राता जगत्त्रये।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति।।6।।

जिनेभक्ति, र्जिनेभक्ति, जिनेभक्तिर्दिने-दिने।
सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु, सदामेऽस्तु भवे-भवे।।7।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

महामंत्र णमोकार पूजा

स्थापना

णमोकार महामंत्र जगत में, सब मंत्रों से न्यारा है।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य प्रदायक, अतिशय प्यारा प्यारा है।।
श्रद्धा भक्ति से जो प्राणी, महामंत्र को ध्याते हैं।
सुख-शांति आनन्द प्राप्त कर, शिव पदवी को पाते हैं।।
सब मंत्रों का मूल मंत्र है, करते हम उसका अर्चन।
विशद हृदय में आह्वानन कर, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंचनमस्कार मंत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छंद-मोतियादाम)

हमने इस तन को धो-धोकर, सदियों से स्वच्छ बनाया है।
किन्तु क्रोधादि कषायों ने, चेतन में दाग लगाया है।।
अब चित् के निर्मल करने को, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन का काल अनादि से, पुद्गल से गहरा नाता है।
कर्मों की अग्नि धधक रही, संताप उसी से आता है।।
अब शीतल चंदन अर्पित कर, संताप नशाने आए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखण्ड आतम अनुपम, खण्डित पद में रम जाती है।
स्पर्श गंध रस रूप मिले, उनसे मिलकर भटकाती है।
अब अक्षय अक्षत चढ़ा रहे, अक्षय पद पाने आये हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन काम वासना से वासित, तन कारागृह में रहता है।
आयु के बन्धन में बंधकर, जो दुःख अनेकों सहता है।।
अब काम वासना नाश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भोजन किया मगर, नित प्रति भूखे हो जाते हैं।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, न ज्ञानामृत हम पाते हैं।।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन की आभा के आगे, दिनकर भी शरमा जाता है।
आवरण पड़ा वसु कर्मों का, स्वरूप नहीं दिख पाता है।।
अब मोह अन्ध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो तीव्रोदय जब कर्मों का, पुरुषार्थ हीन पड़ जाता है।
यह जीव शुभाशुभ कर्मों के, फल से सुख-दुःख बहु पाता है।।
अब अष्ट कर्म का यह ईंधन, शुभ आज बनाकर लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नर गति में जन्म हुआ मेरा, यह पूर्व पुण्य की माया है।
इसमें भी पाप कमाया है, न मोक्ष महाफल पाया है।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, यह सरस-सरस फल लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं आठ कर्म के ठाठ महा, जीवों को दास बनाते हैं।
मोहित करके सारे जग को, वह बारम्बार नचाते हैं।।
हो पद अनर्घ शुभ प्राप्त हमें, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्रित कर महामंत्र से, प्रासुक नीर महान्।
शांतिधारा दे रहे, करके हम गुण गान।।

शांतिधारा......

पुष्पांजलि को पुष्प यह, पुष्पित लिए महान्।
महामंत्र का जाप कर, करने को गुणगान।।

पुष्पांजलि......

जयमाला

दोहा- **परमेष्ठी की वन्दना, प्राणी करें त्रिकाल।**
महामंत्र नवकार की, गाते हम जयमाल।।

(चाल छन्द)

हम महामंत्र को गायें, उसमें ही ध्यान लगाएँ।
निज ह्रदय कमल में ध्यायें, फिर सादर शीश झुकाएँ।।
शुभ पाँच सुपद हैं भाई, पैंतिस अक्षर सुखदायी।
हैं अट्ठावन मात्राएँ, बनती हैं कई विधाएँ।।
प्राकृत भाषा में जानों, बहु अतिशयकारी मानो।
पाँचों परमेष्ठी ध्याते, उनके चरणों सिर नाते।।
पहले अर्हत् को ध्याते, जो केवल ज्ञान जगाते।
फिर सिद्धों के गुण गाते, जो अष्ट गुणों को पाते।।
जो रत्नत्रय के धारी, हैं जन-जन के उपकारी।
हम आचार्यों को ध्याते, जो छत्तिस गुण को पाते।।
जो पच्चिस गुण के धारी, हैं जन-जन के उपकारी।
सब साधु ध्यान लगाते, निज आतम ज्ञान जगाते।।
जो परमेष्ठी को ध्याते, वह परमेष्ठी बन जाते।
फिर कर्म निर्जरा करते, अपने कर्मों को हरते।।
कई अर्हत् पदवी पाते, वह तीर्थंकर बन जाते।
फिर केवल ज्ञान जगाते, कई देव शरण में आते।।
वह समवशरण बनवाते, सब दिव्य देशना पाते।
हे भाई ! श्रद्धा धारो, अपना श्रद्धान सम्हारो।।
हम यही भावना भाते, जिन पद में शीश झुकाते।
नित परमेष्ठी को ध्यायें, हम भावसहित गुण गायें।।
अनुक्रम से मुक्ति पावें, भवसागर से तिर जावें।
हम शिव सुख में रम जावें, इस भव का भ्रमण नशावें।।

दोहा- महामंत्र के जाप से, नशते हैं सब पाप।
कर्मों का भी नाश हो, मिट जाए संताप।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच के, चरण झुकाते शीश।
पुष्पांजलि कर पूजते, सुर नर इन्द्र मुनीश।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

णमो अरिहंताणं अरहंतों के बीजाक्षर अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

णमो जिणाणं श्री जिनेन्द्र पद, भाव सहित करके अर्चन।
तीन योग से शीश झुकाकर, चरणों में करते वंदन।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।1।।

ॐ ह्रां ''ण'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष मार्ग दर्शाने वाले, श्री जिनेन्द्र के चरण नमन।
पूजा अर्चन करके भगवन, हो जावें मम कर्म शमन।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।2।।

ॐ ह्रां ''म'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहन्तों का स्वर्ण कमल पर, होता है शुभ गगन गमन।
इन्द्र करें रचना कमलों की, हो भक्ति में पूर्ण मगन।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।3।।

ॐ ह्रां ''अ'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षक हैं जो भवि जीवों के, हितकारी हैं श्रेष्ठ वचन।
सौ-सौ इन्द्रों से पूजित हैं, मंगलमय जिनराज चरण।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।4।।

ॐ ह्रां ''र'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हंता कर्म घातिया अनुपम, पाए केवल ज्ञान सघन।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, बने प्रभु जग में अर्हन्।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।5।।

ॐ ह्रां ''हं'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तारणहार कहे इस जग में, मैट रहे भव की भटकन।
विशद हृदय के सिंहासन पर, बैठाकर नित करूँ मनन।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।6।।

ॐ ह्रां ''त'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो णमो अरिहन्ताणं यह, प्रथम रहा पद मंगलकार।
ध्यान जाप करते इस पद का, विशद भाव से बारम्बार।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।7।।

ॐ ह्रां ''णं'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्तों को नमन किया है, जिसमें पद यह रहा महान्।
श्रेष्ठ णमो अरिहंताणं का, करते हैं हम भी गुणगान।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।8।।

ॐ ह्रां ''सर्व'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो सिद्धाणं **सिद्धों के बीजाक्षर अर्घ्य**

(शम्भू छन्द)

णमो श्री सिद्धाणं कहकर, सिद्धों को करते वन्दन।
अष्ट गुणों को पाने हेतु, अर्घ्य शुभम् करते अर्पण।।
नित्य निरंजन हैं अविकारी, नहीं गुणों का जिनके पार।
प्राप्त किए जो गुण अविनाशी, उनको वन्दन बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं ''ण'' बीजाक्षर सहित श्री सिद्ध नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महल में रहने वाले, सिद्ध सनातन रहे त्रिकाल।
वन्दन करते उनके चरणों, जग के प्राणी हो नतभाल।।
नित्य निरंजन हैं अविकारी, नहीं गुणों का जिनके पार।
प्राप्त किए जो गुण अविनाशी, उनको वन्दन बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं ''म'' बीजाक्षर सहित श्री सिद्ध नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धों की महिमा है अनुपम, गुण अनन्त के कोष कहे।
काल अनादि हैं अनन्त जो, पूर्ण रूप निर्दोष रहे।।
नित्य निरंजन हैं अविकारी, नहीं गुणों का जिनके पार।
प्राप्त किए जो गुण अविनाशी, उनको वन्दन बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं ''स'' बीजाक्षर सहित श्री सिद्ध नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धाम कहा सिद्धालय जिनका, सिद्ध शिला पर कीन्हा वास।
विशद गुणों में लीन हुए जो, किए कर्म का पूर्ण विनाश।।

नित्य निरंजन हैं अविकारी, नहीं गुणों का जिनके पार।
प्राप्त किए जो गुण अविनाशी, उनको वन्दन बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं ''ध'' बीजाक्षर सहित श्री सिद्ध नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो-णमो सिद्धाणं बोलो, विशद भाव से करो नमन।
निज आतम की सिद्धि हेतु, सिद्धों का नित करो मनन।।
नित्य निरंजन हैं अविकारी, नहीं गुणों का जिनके पार।
प्राप्त किए जो गुण अविनाशी, उनको वन्दन बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं ''णं'' बीजाक्षर सहित श्री सिद्ध नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब सिद्धों को नमन किया है, वह पद जानो मंगलकार।
ॐ णमो सिद्धाणं पद को, नमन करें हम बारम्बार।।
नित्य निरंजन हैं अविकारी, नहीं गुणों का जिनके पार।
प्राप्त किए जो गुण अविनाशी, उनको वन्दन बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं ''सर्व'' बीजाक्षर सहित श्री सिद्ध नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो आयरियाणं **आचार्यों के बीजाक्षर अर्घ्य**

(शम्भू छन्द)

णमो आयरियाणं कहकर, भक्ति में हो जाओ मगन।
इनकी अर्चा करने वाले, मोक्ष मार्ग पर करें गमन।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रूँ ''ण'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष मार्ग के राही अनुपम, रत्नत्रय के कोष महान।
छत्तिस मूल गुणों के धारी, जैन धर्म की हैं जो शान।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रूँ ''म'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्यों के पद में वन्दन, करते सब संसारी जीव।
सम्यक् श्रद्धा पाने वाले, पुण्य कमाते सदा अतीव।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।3।।

ॐ हूँ ''अ'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यश कीर्ति की नहीं कामना, जैन धर्म के साधक श्रेष्ठ।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ज्ञानी कहे गए जो ज्येष्ठ।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।4।।

ॐ हूँ ''य'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय को धारण करते, आवश्यक पालैं तप घोर।
विशद धर्म के धारी अनुपम, गुप्ति पालै भाव विभोर।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।5।।

ॐ हूँ ''र'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यति धर्म के धारी हैं जो, देते हैं जग को संदेश।
यत्र-तत्र सर्वत्र हमेशा, धर्म का देते हैं उपदेश।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।6।।

ॐ हूँ ''य'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो णमो आयरियाणं, जाप करें या करते ध्यान।
श्रद्धा भक्ति से अर्चा कर, करते प्राणी निज कल्याण।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।7।।

ॐ हूँ ''णं'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ णमो आयरियाणं पद, में आचार्यों को वन्दन।
करके भव्य जीव करते हैं, भाव सहित उनका अर्चन।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।8।।

ॐ हूँ ''सर्व'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो उवज्झायाणं उपाध्यायों के बीजाक्षर अर्घ्य

(विष्णुपद छन्द)

णमो उवज्झायाणं बोलें, इस जग के प्राणी।
उपाध्याय जी द्वादशांग के, होते हैं ज्ञानी।।
पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।1।।

ॐ ह्रौं ''ण'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष मार्ग के उपदेशक की, महिमा हम गाते।
भाव सहित वन्दन करने को, चरणों शिर नाते।।
पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।2।।

ॐ ह्रौं ''म'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उभय ज्ञान को पाने वाले, ज्ञानी संत रहे।
ज्ञान ध्यान तप करने वाले, पाठक आप कहे।।
पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।3।।

ॐ ह्रौं ''उ'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु स्वरूप तत्त्व के ज्ञाता, श्रद्धा के धारी।
मुक्ति वधु के अमर चहेते, जग जन उपकारी।।

पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।4।।

ॐ ह्रौं ''व'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झरना उर में वात्सल्य का, जिनके सदा बहे।
उनका वास हृदय में मेरे, हर पल सदा रहे।।
पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।5।।

ॐ ह्रौं ''झ'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यति यत्न करने वाले हैं, मुक्ति पथगामी।
देव शास्त्र गुरु के होते हैं, अविरल पथगामी।।
पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।6।।

ॐ ह्रौं ''य'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार का पद यह चौथा, है मंगलकारी।
मोक्षमहल का ध्यान जाप से, होवे अधिकारी।।
पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।7।।

ॐ ह्रौं ''णं'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो उवज्झायाणं पद की, महिमा हम गाते।
उपाध्याय को नमन करें हम, पद में सिरनाते।।
पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।8।।

ॐ ह्रौं ''सर्व'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***

णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधु के बीजाक्षर अर्घ्य

(टप्पा छन्द)

णमो लोए सव्व साहूणं, बोलें सब भाई।
इनकी अर्चा होती जग में, अतिशय सुखदाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।1।।

ॐ ह्रः ''ण'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षमार्ग के राही अनुपम, सब साधु भाई।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, अतिशय हर्षाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।2।।

ॐ ह्रः ''म'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकवर्ति जीवों पर हरदम, दया करें भाई।
महाव्रतों का पालन करने, की प्रभुता पाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।3।।

ॐ ह्रः ''ल'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक दोय तिय चार पाँच छह, रस त्यागें भाई।
इन्द्रिय विषय कषाय जीतकर, तप करते जाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।4।।

ॐ ह्रः ''ए'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण तप, की प्रभुता पाई।
समिति गुप्ति का पालन करते, भाव सहित भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।5।।

ॐ ह्रः ''स'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वश में किया है जिसने मन को, जैन मुनि भाई।
ज्ञान ध्यान तप साधक मुनि की, महिमा सुखदाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।6।।

ॐ ह्रः ''व'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साध्य और साधक का अन्तर, मैट रहे भाई।
निज आतम में लीन रहो नित, अतिशय है पाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।7।।

ॐ ह्रः ''स'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ह्रदय कमल में वास धर्म का, जिनके है भाई।
क्षमा आदि धर्मों का पालन, करते हर्षाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।8।।

ॐ ह्रः ''ह'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार का पद यह अन्तिम, श्रेष्ठ रहा भाई।
साधु पद के बिना किसी ने, मुक्ति नहीं पाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।9।।

ॐ ह्रः ''णं'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो लोए सव्व साहूणं यह, पद है सुखदाई।
सर्व साधु को नमन है जिसमें, श्रेष्ठ कहा भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।10।।

ॐ ह्रः ''सर्व'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार मंत्र का महात्म्य- बीजाक्षरों के अर्घ्य

ऐसो पञ्च णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(चौपाई छंद)

ऐसा मंत्र जगत में भाई, और नहीं देखा सुखदाई।
मुक्त हुए कई सुनकर प्राणी, ऐसा कहती है जिनवाणी।।1।।

ॐ ह्रीं ''ऐ'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोई हुई चेतना जागे, निज हित में नित मानव लागे।
महामंत्र की महिमा जानो, मंगलकारी अतिशय मानो।।2।।

ॐ ह्रीं ''स'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च परम परमेष्ठी गाए, उनको भाव सहित जो ध्याये।
वह मानव सुख शांति पाए, शिवपुर का वासी बन जाए।।3।।

ॐ ह्रीं ''प'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गति के दुःख सहे हैं, शेष कोई भी नहीं रहे हैं।
महामंत्र को हम ध्यायेंगे, तभी मोक्ष पदवी पायेंगे।।4।।

ॐ ह्रीं ''च'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार है मंत्र निराला, मोक्ष महाफल देने वाला।
जिसकी महिमा जग से न्यारी, भवि जीवों का है उपकारी।।5।।

ॐ ह्रीं ''ण'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महामद के जो त्यागी, श्रेष्ठ गुणों के हैं अनुरागी।
इनको भाव सहित जो ध्याते, वह निश्चय से शिवपद पाते।।6।।

ॐ ह्रीं ''म'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काँच और कंचन को पाते, हर्ष विषाद न मन में लाते।
इस प्रकार समता उपजावे, महामंत्र शिवपद दिखलावे।।7।।

ॐ ह्रीं ''क'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग शोक संताप नशाए, प्राणी के सौभाग्य जगाए।
महामंत्र को जो भी ध्याये, अनुक्रम से शिव पदवी पाए।।8।।
ॐ ह्रीं ''र'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सर्व लोक में मंगलकारी, जीवों का है संकटहारी।
महिमा का न पार है भाई, महामंत्र अतिशय सुखदाई।।9।।
ॐ ह्रीं ''स'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वर्णन कोई न कर पाए, महिमा कौन मंत्र की गाए।
काल अनादि जो कहलाए, ध्याकर प्राणी शिवपद पाए।।10।।
ॐ ह्रीं ''व'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पापों को जड़मूल नशाए, पुण्य का जो हेतु कहलाए।
महामंत्र को हम भी ध्यायें, कर्म नाशकर मुक्ति पायें।।11।।
ॐ ह्रीं ''प'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वह मानव बहु पुण्य कमायें, महामंत्र को जो भी ध्यायें।
भाव सहित वचनों से गाए, अपने प्राणी भाग्य जगाए।।12।।
ॐ ह्रीं ''व'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पहले महामंत्र को ध्याओ, फिर चत्तारि मंगल गाओ।
उत्तम चार लोक में गाए, शरण प्राप्त कर शिवसुख पाए।।13।।
ॐ ह्रीं ''प'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
णमोकार महामंत्र निराला, भव सुख दे शिव देने वाला।
हृदय कमल में इसे सजायें, ध्यान करें शिव पदवी पायें।।14।।
ॐ ह्रीं ''ण'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सद्दर्शन सद्ज्ञान प्रदाता, महामंत्र जग में कहलाता।
मोक्ष मार्ग का कारण भाई, श्रेष्ठ कहा अनुपम सुखदाई।।15।।
ॐ ह्रीं ''स'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
णमोकार बोलें जो प्राणी, हो पवित्र उनकी भी वाणी।
तन-मन भी पावन हो जाए, कर्म नाशकर मुक्ति पाए।।16।।
ॐ ह्रीं ''ण'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **मंगलमय मंगलकरन, महामंत्र नवकार।**
ध्यान जाप करके सभी, पाते भव से पार।।17।।
ॐ ह्रीं ''म'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
गहन करें चिंतन मनन, भाव सहित जो लोग।
महामंत्र नवकार जप, पावें शिवपद योग।।18।।
ॐ ह्रीं ''ग'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लाख चौरासी मंत्र में, कहा गया जो श्रेष्ठ।
णमोकार महामंत्र को, ध्याओ आप यथेष्ठ।।19।।
ॐ ह्रीं ''ल'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
णमोकार महामंत्र का, ध्यान जाप सुखकार।
करने से जग जीव का, होय विशद उद्धार।।20।।
ॐ ह्रीं ''णं'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चरण कमल की वंदना, करते हैं जो जीव।
परमेष्ठी जिन पाँच की, पावें सौख्य अतीव।।21।।
ॐ ह्रीं ''च'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सकल धर्म का मूल है, मंत्र अनादि अनन्त।
सिद्ध दशा को पा गए, सन्त अनन्तानन्त।।22।।
ॐ ह्रीं ''स'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वसुधा पर वसु द्रव्य से, पूजा करें त्रिकाल।
परमेष्ठी जो पाँच है, गा करके जयमाल।।23।।
ॐ ह्रीं ''व'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिन्धु का जल शुद्ध ले, करके पद प्रच्छाल।
परमेष्ठी जिन पाँच को, वन्दन करूँ त्रिकाल।।24।।
ॐ ह्रीं ''स'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
परमेष्ठी की वन्दना, करते हम धर ध्यान।
शीघ्र हमें भी प्राप्त हो, वीतराग विज्ञान।।25।।
ॐ ह्रीं ''प'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढलता जीवन जा रहा, किया न निज का ध्यान।
महामंत्र का जाप कर, पाना सम्यक् ज्ञान।।26।।

ॐ ह्रीं ''ढ'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल जग में पाँच हैं, अर्हत् सिद्धाचार्य।
उपाध्याय जिन साधु के, पद पूजें सब आर्य।।27।।

ॐ ह्रीं ''मं'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आये तव शरण में, दर्शन करने नाथ।
परमेष्ठी जिन पाँच के, चरण झुकाते माथ।।28।।

ॐ ह्रीं ''ह'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु तत्त्व का ज्ञान दे, जिनका सद् उपदेश।
राही मुक्ति मार्ग के, श्रेष्ठ दिगम्बर भेष।।29।।

ॐ ह्रीं ''व'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश कहे इस लोक में, धर्म के शुभ आधार।
परमेष्ठी हैं पूज्य सब, जग में अपरम्पार।।30।।

ॐ ह्रीं ''इ'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलकारी लोक में, रहे पञ्च परमेश।
करके इनकी वन्दना, जाना है निज देश।।31।।

ॐ ह्रीं ''मं'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्राहक बनकर धर्म के, करते धर्म प्रचार।
देते हैं जो परम पद, जग में मंगलकार।।32।।

ॐ ह्रीं ''ग'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्य बनाकर हम विशद, करते हैं गुणगान।
शिवपद हमको प्राप्त हो, वीतराग विज्ञान।।33।।

ॐ ह्रीं ''ल'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन-वच-तन से पूजते, परमेष्ठी जिन पाँच।
हमको भी शिव राह दो, मिटे कर्म की आँच।।34।।

ॐ ह्रीं ''म'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामंत्र इस लोक में, करे कर्म का नाश।
वीतराग जिन धर्म का, नित प्रति करे प्रकाश।।
सर्व मंगलों में प्रथम, मंगल रहा महान।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव से, किया विशद गुणगान।।35।।

ॐ ह्रीं ''सर्व'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य :- ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- महामंत्र नवकार का, किया विशद गुणगान।
गाते हैं जयमालिका, पाने पद निर्वाण।।

(शम्भू छन्द)

महामंत्र शाश्वत है जग में, जिसकी महिमा अपरम्पार।
पाप शाप संताप विनाशक, सर्व जगत् में मंगलकार।।1।।
सर्व अमंगल हरने वाला, तीन लोक में परम पवित्र।
स्वर्ग मोक्ष को देने वाला, जन-जन का हितकारी मित्र।।2।।
सर्व मंगलों में मंगल शुभ, णमोकार पहला मंगल।
क्षण में सर्व अमंगल हरता, करता है जग का मंगल।।3।।
पवित्रापवित्र सुस्थित दुःस्थित, होकर के कोई जाप करे।
निमिष मात्र में अपने सारे, कोटि जन्म के पाप हरे।।4।।
णमोकार शुभ है मंगलमय, तीन लोक में श्रेष्ठ रहा।
भवि जीवों को अभय प्रदायक, भवि जीवों के लिए कहा।।5।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, इसका कौन बखान करे।
शब्द नहीं हैं पास हमारे, कैसे हम गुणगान करें।।6।।
इसके पठन श्रवण से होता, विषय कषायों का परिहार।
चिन्तन मनन से हो जाता है, अन्तर्मन निर्मल अविकार।।7।।

इसके ध्यान मात्र से होता, अन्तर में आनन्द अपार।
उच्चारण करने से होता, मानव जीवन मंगलकार ॥8॥
भाव सहित हम परमेष्ठी कृत, महामंत्र को ध्याते हैं।
पूजा अर्चा भक्ति वन्दना, करके हृदय सजाते हैं॥9॥
परमेष्ठी पद हमें प्राप्त हो, विशद् भावना भाते हैं।
तीन योग से वन्दन करने, पद में शीश झुकाते हैं॥10॥
महामंत्र को सुनकर भाई, नाग-नागिनी हुए निहाल।
अंजन जैसे अधम चोर भी, हुए निरंजन पूज्य त्रिकाल॥11॥
सती अंजना ने संकट में, महामंत्र को ध्याया था।
सेठ सुदर्शन ने सूली से, सिंहासन को पाया था॥12॥
सनतकुमार मुनि वादिराज ने, महामंत्र को ध्याया।
कुष्ठ रोग का नाश हुआ, तव कंचन हो गई काया॥13॥
पाँचों पाण्डव को आभूषण, गरम-गरम पहनाए।
महामंत्र का ध्यान किए तो, स्वर्ग मोक्ष फल पाए॥14॥

दोहा- महामंत्र नवकार की, महिमा अगम अपार।
ध्यान जाप करके 'विशद', प्राणी हो भवपार॥

ॐ ह्रीं श्री अनादि निधन पंञ्चनमस्कार मंत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच का वाचक मंत्र महान।
णमोकार है नाम शुभ, करूँ विशद गुणगान॥

(इत्याशीर्वादः)

प्रशस्ति

सर्व लोक के मध्य है, जम्बूद्वीप महान।
महिमा जिसकी अगम है, कौन करे गुणगान॥
दक्षिण में जिसके रहा, भरत क्षेत्र विख्यात।
छह खण्डों से युक्त है, कर्मभूमि हो ज्ञात॥
सुषमा-सुषमा आदि छह, होते जिसमें काल।
जिसके चौथे काल में, जिनवर होंय त्रिकाल॥
चौबिस तीर्थंकर सदा, क्रमशः होते सिद्ध।
तीर्थक्षेत्र सम्मेद गिरि, जग में रहा प्रसिद्ध॥
वर्तमान अवसर्पिणी, का यह चौथा काल।
बीस जिनेश्वर तीर्थ से, मुक्ति पाए त्रिकाल॥
महामंत्र णमोकार के, पैंतिस अक्षर जान।
बीजाक्षर के रूप में, लिक्खा गया विधान॥
पच्चिस सौ पैंतिस रहा, श्रेष्ठ वीर निर्वाण।
श्रावण शुक्ल त्रयोदशी, को पाया अवसान॥
दो हजार सन् नौ रहा, वर्षायोग विशेष।
भीलवाड़ा नगरी शुभम्, पारसनाथ जिनेश॥
चरण शरण में बैठकर, जोड़े शब्द विशाल।
जिससे यह रचना बनी, होवे पूज्य त्रिकाल॥
बीजाक्षर महामंत्र का, है माहात्म महान्।
विशद भाव से यह किया, लघु धी से गुणगान॥
लघु शब्दों में यह किया, महामंत्र गुणगान।
भूल-चूक को भूलकर, शोध पढ़ें धीमान्॥

आरती

तर्ज : आज मंगलवार है...

महामंत्र नवकार है, मुक्ति का यह द्वार है।
ध्यान जाप आरति कर प्राणी, होता भव से पार है।।
महामंत्र ....
महामंत्र के पञ्च पदों में, परमेष्ठी को ध्याया है।
अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु गुण गाया है।।
महामंत्र नवकार...... ।।1।।
मूलमंत्र अपराजित आदि, मंत्रराज कई नाम रहे।
श्रेष्ठ अनादिऽनिधन मंत्र से, और अनेकों नाम कहे।।
महामंत्र नवकार...... ।।2।।
महामंत्र को जपने वाले, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
सुख शांति आनन्द प्राप्त कर, निज सौभाग्य जगाते हैं।।
महामंत्र नवकार...... ।।3।।
काल अनादि से जीवों ने, सत् श्रद्धान जगाया है।
महामंत्र का ध्यान जापकर, स्वर्ग मोक्ष पद पाया है।।
महामंत्र नवकार...... ।।4।।
सुनकर नाग नागिनी जिसको, पद्मावति धरणेन्द्र भये।
अन्जन हुए निरन्जन पढ़कर, अन्त समय में मोक्ष गये।।
महामंत्र नवकार...... ।।5।।
प्रबल पुण्य के उदय से हमने, महामंत्र को पाया है।
अतिशय पुण्य कमाने का शुभ, हमने भाग्य जगाया है।।
महामंत्र नवकार...... ।।6।।
महामंत्र का ध्यान जाप कर, आरति करने आए हैं।
विशद भाव का दीप जलाकर, आज यहाँ पर लाए हैं।
महामंत्र नवकार...... ।।7।।

विशद
श्री पंचमेरु महामण्डल विधान का माण्डना

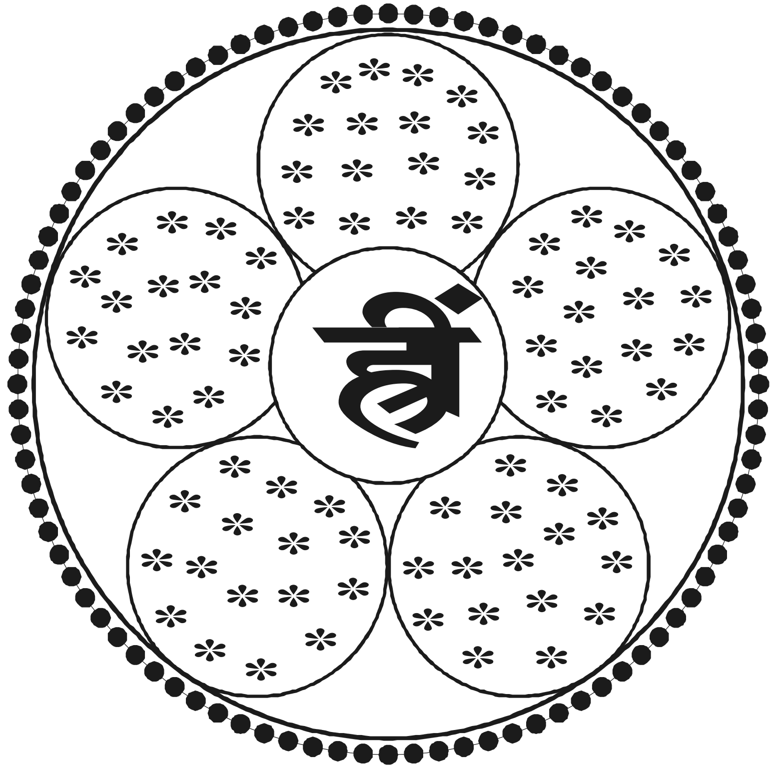

रचयिता :
परम पूज्य क्षमामूर्ति 108 आचार्य विशदसागरजी महाराज

पंचमेरु पूजा

(स्थापना)

ढाई द्वीप में पंचमेरु हैं, श्रेष्ठ सुदर्शन विजय अचल।
मन्दर विद्युन्माली जिनमें, जिन चैत्यालय हैं मंगल।।
चतुर्दिशा के चारों वन में, चैत्यालय हैं मनभावन।
उनमें स्थित जिनबिम्बों का, करते हैं हम आह्वानन।।
अस्सी रहे जिनालय अनुपम, पञ्च मेरुओं में मनहार।
भाव सहित हम अर्चा करते, पाने को शिवपुर का द्वार।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द : अवतार)

हम प्रासुक निर्मल नीर, पावन भर लाए।
अब जन्म-जरा की पीर, मेरी नश जाए।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।1।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की अनुपम गंध, चउ दिश महकाए।
पाएँ अतिशय आनन्द, भव तम नश जाए।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।2।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत मनहार, चरणों हम लाए।
पाएँ अक्षय उपहार, महिमा हम गाए।।

हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।3।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पित यह पुष्प महान्, मेरे मन भाए।
हम करते हैं गुणगान, वासना नश जाए।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।4।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हो क्षुधा व्याधि का नाश, भावना यह भाए।
हो आतम ज्ञान प्रकाश, चरण में चरु लाए।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।5।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धकार का नाश, हमको करना है।
कर दीपक ज्योति प्रकाश, भव दुःख हरना है।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।6।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला नाश, मेरी हो जाए।
हो आतम ज्ञान प्रकाश, धूप खेने लाए।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।7।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो मोक्ष महाफल प्राप्त, तुमको ध्याते हैं।
यह श्रेष्ठ सरस फल नाथ, चरण चढ़ाते हैं।।

हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।8।।
ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने सच्चा स्वरूप, अब तक न पाया।
मेरा है चेतन रूप, उसको बिसराया।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।9।।
ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्रेष्ठ सुगन्धित नीर से, देते हैं जलधार।
जीवन सुखमय शांत हो, मिले मोक्ष का द्वार।। *शांतये शांतिधारा*
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पुष्प लिए शुभ हाथ।
जिन गुण पाने के लिए, झुका चरण में माथ।। *पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्*

जयमाला

दोहा- ढाई द्वीप के मध्य हैं, मेरु पंच महान्।
जयमाला गाते विशद, करते हैं गुणगान।।

(बेसरी छन्द)

प्रथम सुदर्शन मेरु कहाया, भद्रशाल वन में बतलाया।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए।।
योजन पञ्च शतक पे जानो, ऊपर नन्दन वन पहिचानो।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए।।
साढ़े बासठ सहस्र बताया, ऊर्ध्व सौमनस वन कहलाया।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए।।
योजन छत्तिस सहस्र ऊँचाई, पाण्डुक वन सोहे तँह भाई।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए।।

चारों मेरु समान बताए, भू पर भद्रशाल कहलाए।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए।।
योजन पञ्च शतक पर जानो, नन्दन वन चारों दिश मानो।
चारों दिश चैत्यालय गाए, अर्चा के शुभ भाव बनाए।।
साढ़े पचपन सहस्र ऊँचाई, सौमनस वन की जानो भाई।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए।।
सहस्र अट्ठाइस योजन गाये, पाण्डुक वन ऊँचे बतलाए।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा को शुभ भाव बनाए।।
सुर नर विद्याधर मिल आवे, जिन वंदन करके सुख पावे।
चैत्यालय अस्सी शुभ गाए, वन्दन करने को हम आए।।
मेरु सुदर्शन की ऊँचाई, एक लाख योजन बतलाई।
विजयादि चारों की भाई, लख-चौरासी योजन गाई।।
एक महायोजन शुभ जानो, दो हजार कोष का मानो।
इससे मेरू मापा जाए, बीस करोड़ कोष हो जाए।।
दक्षिण पाण्डुक वन में भाई, पाण्डुक शिला बनी सुखदाई।
रत्न कम्बला शिला बताई, उत्तर वन में सोहे भाई।।
रत्नशिला पूरब में जानो, रत्नमयी इसको पहिचानो।
पाण्डु कम्बला है मनहारी, पश्चिम वन में मंगलकारी।।
श्रेष्ठ इन्द्र उस वन में जाते, तीर्थंकर का न्हवन कराते।
यहाँ बैठकर भाव बनाते, जिनपद में हम शीश झुकाते।।

दोहा- चैत्यालय अस्सी रहे, पञ्च मेरु के धाम।
उनमें जो जिनबिम्ब हैं, उनको विशद प्रणाम।।
ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पञ्च मेरु हम पूजते, विशद भाव के साथ।
अर्घ्य चढ़ा अर्चा करें, झुका रहे हैं माथ।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

प्रथम वलय :

दोहा- मेरु सुदर्शन में रहे, जिन के बिम्ब महान्।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने पद निर्वाण।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

ढाई द्वीप में पंचमेरु हैं, श्रेष्ठ सुदर्शन विजय अचल।
मन्दर विद्युन्माली जिनमें, जिन चैत्यालय हैं मंगल।।
चतुर्दिशा के चारों वन में, चैत्यालय हैं मनभावन।
उनमें स्थित जिनबिम्बों का, करते हैं हम आह्वानन।।
अस्सी रहे जिनालय अनुपम, पञ्च मेरुओं में मनहार।
भाव सहित हम अर्चा करते, पाने को शिवपुर का द्वार।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जम्बू द्वीप के मध्य सुमेरु, जिसका रहा सुदर्शन नाम।
भद्रशाल वन पूर्व दिशा में, जिन मंदिर अतिशय अभिराम।।
अकृत्रिम रत्नों से मण्डित, महिमा जिसकी अपरम्पार।
शोभित हैं जिनबिम्ब आठ शत्, जिन को वन्दन बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित भद्रशाल वन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बू द्वीप के मध्य सुमेरु, जिसका रहा सुदर्शन नाम।
भद्रशाल वन के दक्षिण में, जिन मंदिर अतिशय अभिराम।।
अकृत्रिम रत्नों से मण्डित, महिमा जिसकी अपरम्पार।
शोभित हैं जिनबिम्ब आठ शत्, जिन को वन्दन बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित भद्रशाल वन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बू द्वीप के मध्य सुमेरु, जिसका रहा सुदर्शन नाम।
भद्रशाल वन पश्चिम दिश में, जिन मंदिर अतिशय अभिराम।।
अकृत्रिम रत्नों से मण्डित, महिमा जिसकी अपरम्पार।
शोभित हैं जिनबिम्ब आठ शत्, जिन को वन्दन बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित भद्रशाल वन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बू द्वीप के मध्य सुमेरु, जिसका रहा सुदर्शन नाम।
भद्रशाल वन उत्तर दिशा में, जिन मंदिर अतिशय अभिराम।।
अकृत्रिम रत्नों से मण्डित, महिमा जिसकी अपरम्पार।
शोभित हैं जिनबिम्ब आठ शत्, जिन को वन्दन बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित भद्रशाल वन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सरसी छन्द)

मेरु सुदर्शन जम्बू द्वीप के, बीचों-बीच रहा।
नन्दन वन पूरब में मंदिर, अतिशयकार कहा।।
रत्नजड़ित अकृत्रिम अनुपम, पावन मंगलकार।
एक सौ आठ श्रेष्ठ प्रतिमाएँ, वन्दन बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित नन्दनवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु सुदर्शन जम्बू द्वीप के, बीचों-बीच रहा।
नन्दन वन दक्षिण में मंदिर, अतिशयकार कहा।।
रत्नजड़ित अकृत्रिम अनुपम, पावन मंगलकार।
एक सौ आठ श्रेष्ठ प्रतिमाएँ, वन्दन बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित नन्दनवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु सुदर्शन जम्बू द्वीप के, बीचों-बीच रहा।
नन्दन वन पश्चिम में मंदिर, अतिशयकार कहा।।
रत्नजड़ित अकृत्रिम अनुपम, पावन मंगलकार।
एक सौ आठ श्रेष्ठ प्रतिमाएँ, वन्दन बारम्बार।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित नन्दनवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु सुदर्शन जम्बू द्वीप के, बीचों-बीच रहा।
नन्दन वन उत्तर में मंदिर, अतिशयकार कहा।।
रत्नजड़ित अकृत्रिम अनुपम, पावन मंगलकार।
एक सौ आठ श्रेष्ठ प्रतिमाएँ, वन्दन बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित नन्दनवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-जोगीरासा)

जम्बूद्वीप के मध्य सुदर्शन, मेरु मंगलकारी।
पूर्व सौमनस वन में मंदिर, सोहे अतिशयकारी।।
अकृत्रिम रत्नों से मण्डित, जिन मंदिर शुभकारी।
जिनबिम्बों के चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित सौमनसवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप के मध्य सुदर्शन, मेरु मंगलकारी।
दक्षिण वन सुमनस में मंदिर, सोहे अतिशयकारी।।
अकृत्रिम रत्नों से मण्डित, जिन मंदिर शुभकारी।
जिनबिम्बों के चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी।।10।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित सौमनसवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप के मध्य सुदर्शन, मेरु मंगलकारी।
पश्चिम वन सुमनस में मंदिर, सोहे अतिशयकारी।।
अकृत्रिम रत्नों से मण्डित, जिन मंदिर शुभकारी।
जिनबिम्बों के चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी।।11।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित सौमनसवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप के मध्य सुदर्शन, मेरु मंगलकारी।
उत्तर वन सुमनस में मंदिर, सोहे अतिशयकारी।।
अकृत्रिम रत्नों से मण्डित, जिन मंदिर शुभकारी।
जिनबिम्बों के चरण कमल में, अतिशय ढोक हमारी।।12।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित सौमनसवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल-टप्पा)

मेरु सुदर्शन जम्बूद्वीप में, शोभित है भाई।
पाण्डुक वन पूरब में मंदिर, सोहे सुखदाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
अकृत्रिम जिन मंदिर पूजों, हृदय हर्षाई-जिने0...।।13।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु सुदर्शन जम्बूद्वीप में, शोभित है भाई।
पाण्डुक वन दक्षिण में मंदिर, सोहे सुखदाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
अकृत्रिम जिन मंदिर पूजों, हृदय हर्षाई -जिने0.. ।।14।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु सुदर्शन जम्बूद्वीप में, शोभित है भाई।
पाण्डुक वन पश्चिम में मंदिर, सोहे सुखदाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
अकृत्रिम जिन मंदिर पूजों, हृदय हर्षाई -जिने0.. ।।15।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु सुदर्शन जम्बूद्वीप में, शोभित है भाई।
पाण्डुक वन उत्तर में मंदिर, सोहे सुखदाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
अकृत्रिम जिन मंदिर पूजों, हृदय हर्षाई -जिने0.. ।।16।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सुदर्शनमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा- चैत्यालय सोलह कहे, विजय मेरु में खास।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने शिवपुर वास।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

ढाई द्वीप में पंचमेरु हैं, श्रेष्ठ सुदर्शन विजय अचल।
मन्दर विद्युन्माली जिनमें, जिन चैत्यालय हैं मंगल।।
चतुर्दिशा के चारों वन में, चैत्यालय हैं मनभावन।
उनमें स्थित जिनबिम्बों का, करते हैं हम आह्वानन।।
अस्सी रहे जिनालय अनुपम, पञ्च मेरुओं में मनहार।
भाव सहित हम अर्चा करते, पाने को शिवपुर का द्वार।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय सुमेरु है शुभकार।
भद्रशाल वन में चैत्यालय, पूरब में सोहे मनहार।।
रत्नजड़ित अति शोभा मण्डित, जिन मंदिर है मंगलकार।
श्रेष्ठ विराजित जिनबिम्बों को, वन्दन मेरा बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय सुमेरु है शुभकार।
भद्रशाल वन में चैत्यालय, दक्षिण में सोहे मनहार।।
रत्नजड़ित अति शोभा मण्डित, जिन मंदिर है मंगलकार।
श्रेष्ठ विराजित जिनबिम्बों को, वन्दन मेरा बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय सुमेरु है शुभकार।
भद्रशाल वन में चैत्यालय, पश्चिम में सोहे मनहार।।
रत्नजड़ित अति शोभा मण्डित, जिन मंदिर है मंगलकार।
श्रेष्ठ विराजित जिनबिम्बों को, वन्दन मेरा बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकी खण्डद्वीप विजयसुमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय सुमेरु है शुभकार।
भद्रशाल वन में चैत्यालय, उत्तर दिशा में सोहे मनहार।।
रत्नजड़ित अति शोभा मण्डित, जिन मंदिर है मंगलकार।
श्रेष्ठ विराजित जिनबिम्बों को, वन्दन मेरा बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-तोटक)

शुभ पूर्व धातकी खण्ड जान, है विजय मेरु जिसमें प्रधान।
शुभ नन्दन वन की अलग शान, पूरब में मंदिर है महान्।।
रत्नों से मण्डित जो विशेष, शोभित होते जिसमें जिनेश।
हम पूजा करते बार-बार, चरणों में करते नमस्कार।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयमेरुसम्बन्धित नंदनवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पूर्व धातकी खण्ड जान, है विजय मेरु जिसमें प्रधान।
शुभ नन्दन वन की अलग शान, दक्षिण में मंदिर है महान्।।
रत्नों से मण्डित जो विशेष, शोभित होते जिसमें जिनेश।
हम पूजा करते बार-बार, चरणों में करते नमस्कार।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयमेरुसम्बन्धित नंदनवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पूर्व धातकी खण्ड जान, है विजय मेरु जिसमें प्रधान।
शुभ नन्दन वन की अलग शान, पश्चिम में मंदिर है महान्।।
रत्नों से मण्डित जो विशेष, शोभित होते जिसमें जिनेश।
हम पूजा करते बार-बार, चरणों में करते नमस्कार।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयमेरुसम्बन्धित नंदनवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पूर्व धातकी खण्ड जान, है विजय मेरु जिसमें प्रधान।
शुभ नन्दन वन की अलग शान, उत्तर में मंदिर है महान्।।
रत्नों से मण्डित जो विशेष, शोभित होते जिसमें जिनेश।
हम पूजा करते बार-बार, चरणों में करते नमस्कार।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयमेरुसम्बन्धित नंदनवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय मेरु जानिए।
सौमनस वन दिशा पूरब, में जिनालय मानिए।।
अर्घ्य हम करते समर्पित, जिन प्रभु के चरण में।
जग शरण को छोड़कर के, आ गये प्रभु शरण में।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयमेरुसम्बन्धित सौमनसवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय मेरु जानिए।
सौमनस वन दिशा दक्षिण, में जिनालय मानिए।।
अर्घ्य हम करते समर्पित, जिन प्रभु के चरण में।
जग शरण को छोड़कर के, आ गये प्रभु शरण में।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयमेरुसम्बन्धित सौमनसवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय मेरु जानिए।
सौमनस वन दिशा पश्चिम, में जिनालय मानिए।।
अर्घ्य हम करते समर्पित, जिन प्रभु के चरण में।
जग शरण को छोड़कर के, आ गये प्रभु शरण में।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयमेरुसम्बन्धित सौमनसवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, विजय मेरु जानिए।
सौमनस वन दिशा उत्तर, में जिनालय मानिए।।
अर्घ्य हम करते समर्पित, जिन प्रभु के चरण में।
जग शरण को छोड़कर के, आ गये प्रभु शरण में।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयमेरुसम्बन्धित सौमनसवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-मोतियादाम)

धातकी पूरब में मनहार, सुमेरु विजय रहा शुभकार।
श्रेष्ठ वन पाण्डुक रहा महान्, जिनालय पूरब में शुभ मान।।
विराजे जिसमें श्री जिनेश, दिगम्बर है जिनका शुभ भेष।
चढ़ाते उनके चरणों अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकी पूरब में मनहार, सुमेरु विजय रहा शुभकार।
श्रेष्ठ वन पाण्डुक रहा महान्, जिनालय दक्षिण में शुभ मान।।
विराजे जिसमें श्री जिनेश, दिगम्बर है जिनका शुभ भेष।
चढ़ाते उनके चरणों अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकी पूरब में मनहार, सुमेरु विजय रहा शुभकार।
श्रेष्ठ वन पाण्डुक रहा महान्, जिनालय पश्चिम में शुभ मान।।
विराजे जिसमें श्री जिनेश, दिगम्बर है जिनका शुभ भेष।
चढ़ाते उनके चरणों अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकी पूरब में मनहार, सुमेरु विजय रहा शुभकार।
श्रेष्ठ वन पाण्डुक रहा महान्, जिनालय उत्तर में शुभ मान।।
विराजे जिसमें श्री जिनेश, दिगम्बर है जिनका शुभ भेष।
चढ़ाते उनके चरणों अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीप विजयसुमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा- अचल मेरु में जानिए, मंदिर सोलह श्रेष्ठ।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने सुपद यथेष्ट।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

ढाई द्वीप में पंचमेरु हैं, श्रेष्ठ सुदर्शन विजय अचल।
मन्दर विद्युन्माली जिनमें, जिन चैत्यालय हैं मंगल।।
चतुर्दिशा के चारों वन में, चैत्यालय हैं मनभावन।
उनमें स्थित जिनबिम्बों का, करते हैं हम आह्वानन।।
अस्सी रहे जिनालय अनुपम, पञ्च मेरुओं में मनहार।
भाव सहित हम अर्चा करते, पाने को शिवपुर का द्वार।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-हरिगीता)

शुभ द्वीप पश्चिम धातकी में, श्रेष्ठ मेरु अचल है।
वन भद्रशाल दिशा पूरब, में जिनालय अटल है।।
हम अर्घ्य यह करते समर्पित, भाव से जिन चरण में।
अब कृपा करके भक्त को भी, लीजिए प्रभु शरण में।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ द्वीप पश्चिम धातकी, में श्रेष्ठ मेरु अचल है।
वन भद्रशाल दिशा दक्षिण, में जिनालय अटल है।।
हम अर्घ्य यह करते समर्पित, भाव से जिन चरण में।
अब कृपा करके भक्त को भी, लीजिए प्रभु शरण में।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ द्वीप पश्चिम धातकी में, श्रेष्ठ मेरु अचल है।
वन भद्रशाल दिशा पश्चिम, में जिनालय अटल है।।
हम अर्घ्य यह करते समर्पित, भाव से जिन चरण में।
अब कृपा करके भक्त को भी, लीजिए प्रभु शरण में।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ द्वीप पश्चिम धातकी में, श्रेष्ठ मेरु अचल है।
वन भद्रशाल दिशा उत्तर, में जिनालय अटल है।।
हम अर्घ्य यह करते समर्पित, भाव से जिन चरण में।
अब कृपा करके भक्त को भी, लीजिए प्रभु शरण में।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-चामर)

धातकी में पश्चिम के, मेरु अचल जानिए।
नन्दन वन पूरब में, चैत्यालय मानिए।।
अष्ट द्रव्य का सुअर्घ्य, आज यहाँ लाए हैं।
दर्श करके जिनवर के, मन में हर्षाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित नन्दनवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकी में पश्चिम के, मेरु अचल जानिए।
नन्दन वन दक्षिण में, चैत्यालय मानिए।।
अष्ट द्रव्य का सुअर्घ्य, आज यहाँ लाए हैं।
दर्श करके जिनवर के, मन में हर्षाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित नन्दनवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकी में पश्चिम के, मेरु अचल जानिए।
नन्दन वन पश्चिम में, चैत्यालय मानिए।।
अष्ट द्रव्य का सुअर्घ्य, आज यहाँ लाए हैं।
दर्श करके जिनवर के, मन में हर्षाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित नन्दनवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकी में पश्चिम के, मेरु अचल जानिए।
नन्दन वन उत्तर में, चैत्यालय मानिए।।
अष्ट द्रव्य का सुअर्घ्य, आज यहाँ लाए हैं।
दर्श करके जिनवर के, मन में हर्षाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित नन्दनवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज- आओ बच्चो....)

द्वीप धातकी पश्चिम में शुभ, अचल मेरु है अपरम्पार।
श्रेष्ठ सौमनस वन पूरब में, मंदिर सोहे मंगलकार।। वन्दे जिनवरम्-2
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, लाए हम श्रद्धान से।
मुक्ति प्राप्त हमें हो भगवन्, विशद आपके ध्यान से।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित सौमनसवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप धातकी पश्चिम में शुभ, अचल मेरु है अपरम्पार।
श्रेष्ठ सौमनस वन दक्षिण में, मंदिर सोहे मंगलकार।। वन्दे जिनवरम्-2
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, लाए हम श्रद्धान से।
मुक्ति प्राप्त हमें हो भगवन्, विशद आपके ध्यान से।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित सौमनसवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप धातकी पश्चिम में शुभ, अचल मेरु है अपरम्पार।
श्रेष्ठ सौमनस वन पश्चिम में, मंदिर सोहे मंगलकार।। वन्दे जिनवरम्-2
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, लाए हम श्रद्धान से।
मुक्ति प्राप्त हमें हो भगवन्, विशद आपके ध्यान से।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित सौमनसवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप धातकी पश्चिम में शुभ, अचल मेरु है अपरम्पार।
श्रेष्ठ सौमनस वन उत्तर में, मंदिर सोहे मंगलकार।। वन्दे जिनवरम्-2
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, लाए हम श्रद्धान से।
मुक्ति प्राप्त हमें हो भगवन्, विशद आपके ध्यान से।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित सौमनसवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

पश्चिम द्वीप धातकी में शुभ, अचल मेरु है उच्च महान्।
अनुपम पाण्डुक वन पूरब में, मंदिर अतिशय आभावान।।
जिन मंदिर जिन बिम्बों की है, महिमा जग में अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम द्वीप धातकी में शुभ, अचल मेरु है उच्च महान्।
श्रेष्ठ पाण्डुक वन दक्षिण में, मंदिर अतिशय आभावान।।
जिन मंदिर जिन बिम्बों की है, महिमा जग में अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम द्वीप धातकी में शुभ, अचल मेरु है उच्च महान्।
श्रेष्ठ पाण्डुक वन पश्चिम में, मंदिर अतिशय आभावान।।
जिन मंदिर जिन बिम्बों की है, महिमा जग में अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम द्वीप धातकी में शुभ, अचल मेरु है उच्च महान्।
श्रेष्ठ पाण्डुक वन उत्तर में, मंदिर अतिशय आभावान।।
जिन मंदिर जिन बिम्बों की है, महिमा जग में अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते, विशद भाव से बारम्बार।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीप अचलमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा- चैत्यालय सोलह कहे, मन्दर मेरु में खास।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने शिवपुर वास।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

ढाई द्वीप में पंचमेरु हैं, श्रेष्ठ सुदर्शन विजय अचल।
मन्दर विद्युन्माली जिनमें, जिन चैत्यालय हैं मंगल।।
चतुर्दिशा के चारों वन में, चैत्यालय हैं मनभावन।
उनमें स्थित जिनबिम्बों का, करते हैं हम आह्वानन।।
अस्सी रहे जिनालय अनुपम, पञ्च मेरुओं में मनहार।
भाव सहित हम अर्चा करते, पाने को शिवपुर का द्वार।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

पूर्व दिशा के पुष्करार्द्ध में, मन्दर मेरु रहा महान्।
भद्रशाल वन पूर्व दिश में, चैत्यालय है महिमावान।।
शोभित हैं जिनबिम्ब मनोहर, जिसमें रत्नमयी मनहार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, जिनके चरणों बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व दिशा के पुष्करार्द्ध में, मन्दर मेरु रहा महान्।
भद्रशाल वन दक्षिण दिश में, चैत्यालय है महिमावान।।
शोभित हैं जिनबिम्ब मनोहर, जिसमें रत्नमयी मनहार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, जिनके चरणों बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व दिशा के पुष्करार्द्ध में, मन्दर मेरु रहा महान्।
भद्रशाल वन पश्चिम दिश में, चैत्यालय है महिमावान।।
शोभित हैं जिनबिम्ब मनोहर, जिसमें रत्नमयी मनहार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, जिनके चरणों बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व दिशा के पुष्करार्द्ध में, मन्दर मेरु रहा महान्।
भद्रशाल वन उत्तर दिश में, चैत्यालय है महिमावान।।
शोभित हैं जिनबिम्ब मनोहर, जिसमें रत्नमयी मनहार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, जिनके चरणों बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छन्द)

पूर्व दिशा का पुष्करार्द्ध शुभ जानिए, मन्दर मेरु जिसमें अतिशय मानिए।
पूरब में नन्दन वन अतिशयकार है, जहाँ पूज्य जिन मंदिर अति मनहार है।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित नन्दनवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व दिशा का पुष्करार्द्ध शुभ जानिए, मन्दर मेरु जिसमें अतिशय मानिए।
दक्षिण में नन्दन वन अतिशयकार है, जहाँ पूज्य जिन मंदिर अति मनहार है।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित नन्दनवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व दिशा का पुष्करार्द्ध शुभ जानिए, मन्दर मेरु जिसमें अतिशय मानिए।
पश्चिम में नन्दन वन अतिशयकार है, जहाँ पूज्य जिन मंदिर अति मनहार है।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित नन्दनवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व दिशा का पुष्करार्द्ध शुभ जानिए, मन्दर मेरु जिसमें अतिशय मानिए।
उत्तर में नन्दन वन अतिशयकार है, जहाँ पूज्य जिन मंदिर अति मनहार है।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित नन्दनवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(भुजंग प्रयात)

पुष्करार्द्ध पूरब शुभ दीप जिन बताया, मन्दर सुमेरु जिसमें शुभकार गाया।
श्रेष्ठ वन सौमनस पूरब में गाया, जिसमें जिनालय शुभ रत्नमय बताया।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित सौमनसवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पूरब शुभ दीप श्रेष्ठ जानो, मन्दर सुमेरु जिसमें शुभकार मानो।
श्रेष्ठ वन सौमनस दक्षिण में गाया, जिसमें जिनालय शुभ रत्नमय बताया।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित सौमनसवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पूरब शुभ दीप जिन बताए, मन्दर सुमेरु जिसमें शुभकार गाए।
श्रेष्ठ वन सौमनस पश्चिम में गाया, जिसमें जिनालय शुभ रत्नमय बताया।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित सौमनसवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पूरब शुभ दीप मनहारी, मन्दर सुमेरु जिसमें शुभकार भारी।
श्रेष्ठ वन सौमनस उत्तर में गाया, जिसमें जिनालय शुभ रत्नमय बताया।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित सौमनसवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तोटक छन्द)

पुष्करार्द्ध द्वीप पूरब में जानो, मन्दर मेरु जिसमें मानो।
पूरब पाण्डुक वन में प्यारा, चैत्यालय शोभित है न्यारा।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध द्वीप पूरब में जानो, मन्दर मेरु जिसमें मानो।
दक्षिण पाण्डुक वन में प्यारा, चैत्यालय शोभित है न्यारा।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध द्वीप पूरब में जानो, मन्दर मेरु जिसमें मानो।
पश्चिम पाण्डुक वन में प्यारा, चैत्यालय शोभित है न्यारा।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध द्वीप पूरब में जानो, मन्दर मेरु जिसमें मानो।
उत्तर पाण्डुक वन में प्यारा, चैत्यालय शोभित है न्यारा।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप मन्दरमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम वलयः

दोहा- विद्युन्माली मेरु है, उसमें जो जिनधाम।
पुष्पाञ्जलि करते परम, करके विशद प्रणाम।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

ढाई द्वीप में पंचमेरु हैं, श्रेष्ठ सुदर्शन विजय अचल।
मन्दर विद्युन्माली जिनमें, जिन चैत्यालय हैं मंगल।।
चतुर्दिशा के चारों वन में, चैत्यालय हैं मनभावन।
उनमें स्थित जिनबिम्बों का, करते हैं हम आह्वानन।।
अस्सी रहे जिनालय अनुपम, पञ्च मेरुओं में मनहार।
भाव सहित हम अर्चा करते, पाने को शिवपुर का द्वार।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-मोतियादाम)

पुष्करार्द्ध पश्चिम शुभ गाया, विद्युन्माली मेरु बताया।
भद्रशाल वन पूरब जानो, जिसमें मन्दिर अनुपम मानो।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पश्चिम शुभ गाया, विद्युन्माली मेरु बताया।
भद्रशाल दक्षिण वन भाई, जिसमें मन्दिर है सुखदाई।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पश्चिम शुभ गाया, विद्युन्माली मेरु बताया।
भद्रशाल पश्चिम वन भाई, जिसमें मन्दिर है सुखदाई।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पश्चिम शुभ गाया, विद्युन्माली मेरु बताया।
भद्रशाल उत्तर वन भाई, जिसमें मन्दिर है सुखदाई।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित भद्रशालवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सृग्विणी छन्द)

पश्चिम पुष्करार्द्ध पावन इक दीप है, विद्युन्माली मेरु वृक्ष समीप है।
नन्दन वन के पूरब में शुभ जानिए, रत्नमयी मन्दिर शुभ अनुपम मानिए।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित नन्दनवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम पुष्करार्द्ध पावन इक दीप है, विद्युन्माली मेरु वृक्ष समीप है।
नन्दन वन के दक्षिण में शुभ जानिए, रत्नमयी मन्दिर शुभ अनुपम मानिए।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित नन्दनवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम पुष्करार्द्ध पावन इक दीप है, विद्युन्माली मेरु वृक्ष समीप है।
नन्दन वन के पश्चिम में शुभ जानिए, रत्नमयी मन्दिर शुभ अनुपम मानिए।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित नन्दनवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम पुष्करार्द्ध पावन इक दीप है, विद्युन्माली मेरु वृक्ष समीप है।
नन्दन वन के उत्तर में शुभ जानिए, रत्नमयी मन्दिर शुभ अनुपम मानिए।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित नन्दनवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्रीछन्द)

पश्चिम पुष्करार्द्ध में जानो, विद्युन्माली मेरु मानो।
पूर्व सौमनस वन में भाई, चैत्यालय सोहे सुखदाई।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित सौमनसवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम पुष्करार्द्ध में जानो, विद्युन्माली मेरु मानो।
दक्षिण सौमनस वन में भाई, चैत्यालय सोहे सुखदाई।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित सौमनसवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम पुष्करार्द्ध में जानो, विद्युन्माली मेरु मानो।
पश्चिम सौमनस वन में भाई, चैत्यालय सोहे सुखदाई।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित सौमनसवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम पुष्करार्द्ध में जानो, विद्युन्माली मेरु मानो।
उत्तर सौमनस वन में भाई, चैत्यालय सोहे सुखदाई।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित सौमनसवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा का, सर्व जग में ज्ञात है।
मेरु जिसमें श्रेष्ठ सुन्दर, विद्युन्माली ख्यात है।।
पूर्व पाण्डुक दिशागत वन, में चैत्यालय जानिए।
रत्नमय अनुपम अलौकिक, पूज्य जग में मानिए।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन पूर्वदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा का, सर्व जग में ज्ञात है।
मेरु जिसमें श्रेष्ठ सुन्दर, विद्युन्माली ख्यात है।।
दक्षिण पाण्डुक दिशागत वन, में चैत्यालय जानिए।
रत्नमय अनुपम अलौकिक, पूज्य जग में मानिए।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन दक्षिणदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा का, सर्व जग में ज्ञात है।
मेरु जिसमें श्रेष्ठ सुन्दर, विद्युन्माली ख्यात है।।
पश्चिम पाण्डुक दिशागत वन, में चैत्यालय जानिए।
रत्नमय अनुपम अलौकिक, पूज्य जग में मानिए।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन पश्चिमदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा का, सर्व जग में ज्ञात है।
मेरु जिसमें श्रेष्ठ सुन्दर, विद्युन्माली ख्यात है।।
उत्तर पाण्डुक दिशागत वन, में चैत्यालय जानिए।
रत्नमय अनुपम अलौकिक, पूज्य जग में मानिए।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धित पाण्डुकवन उत्तरदिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप- ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंधि अस्सी जिनालयेभ्यो नमः।

दोहा- पञ्च मेरुओं में शुभम्, अस्सी हैं जिन धाम।
उनमें जो जिनबिम्ब हैं, तिन पद विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरु स्थित अस्सी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- ढाई द्वीप के मध्य हैं, मेरु पंच महान्।
जयमाला गाके यहाँ, करते हैं गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

जम्बू द्वीप के मध्य सुदर्शन, मेरु नाभि के आकार।
सहस्र ऊन लख योजन ऊपर, ऊर्ध्व लोक में है विस्तार।।
अन्दर पृथ्वी में जड़ योजन, कही गई सहस्र प्रमाण।
चालिस योजन रही चूलिका, मेरु शिखर पर महिमावान।।1।।

चारों ओर मेरु के भूपर, भद्रशाल वन रहा महान्।
चतुर्दिशा में चैत्यालय शुभ, शोभित होते अतिशयवान।।
पञ्च शतक योजन के ऊपर, नन्दन वन सोहे मनहार।
चतुर्दिशा में बने जिनालय, नन्दन वन में मंगलकार।।2।।
योजन साढ़े बासठ ऊँचे, पर सुमनस वन रहा विशेष।
चतुर्दिशा के चैत्यालय में, रहे विराजित श्री जिनेश।।
छत्तिस योजन ऊपर जाके, पाण्डुक वन भी रहा महान्।
चतुर्दिशा के चैत्यालय में, जिनवर का करते गुणगान।।3।।
मेरु द्वीप धातकी में शुभ, विजय अचल हैं आभावान।
पुष्करार्द्ध में मंदर मेरु, विद्युन्माली रहे महान्।।
सहस्र चौरासी योजन ऊँचे, चारों मेरु रहे समान।
तीर्थंकर का जैनागम में, इस प्रकार से किया बखान।।4।।
भद्रशाल भू पर नन्दन वन, पाँच सौ योजन पर शुभकार।
साढ़े पचपन सहस्र ऊँचाई पर, सुमनस वन है मनहार।।
अट्‌ठाइस योजन के ऊपर, पाण्डुक वन का है विस्तार।
सुर नर विद्याधर चैत्यालय, जिनवर की करते जयकार।।5।।
चार मेरु के चार दिशा में, चौंसठ मंदिर रहे महान्।
सोलह प्रथम मेरु के मिलकर, अस्सी मंदिर आभावान।।
एक सौ आठ प्रति मंदिर में, जिन प्रतिमाएँ हैं शुभकार।
शीश झुकाकर उनके चरणों, वन्दन मेरा बारम्बार।।6।।
मण्डल की रचना करते हैं, हम परोक्ष में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन चरणों की बारम्बार।।
'विशद' भावना भाते हैं हम, कर्मों का हो पूर्ण विनाश।
यह संसार असार छोड़कर, पाएँ हम भी मुक्ति वास।।7।।

दोहा- जयमाला गाके यहाँ, अर्पित करते अर्घ्य।
विशद भावना है यही, पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप पंचमेरुसम्बन्धित चतुर्दिक् जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पञ्च मेरु की वन्दना, हम भी करें परोक्ष।
पञ्च पाप से मुक्त हो, पा जाएँ हम मोक्ष।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज- आज करें हम...)

पञ्च मेरु की करते हैं हम, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर लाए अनुपम, जिनवर के दरबार।। हो जिनवर..

प्रथम सुदर्शन मेरु में शुभ, चैत्यालय शुभकारी।
चार-चार हैं चतुर्दिशा में, अनुपम मंगलकारी।। हो जिनवर..

पूर्व धातकी खण्ड में मेरु, विजय नाम शुभ गाया।
लाख चौरासी योजन ऊँचा, आगम में बतलाया।। हो जिनवर..

अचल मेरु है खण्ड धातकी, पश्चिम में शुभकारी।
स्वर्ण कांति कि आभा वाला, पूजें सब नर-नारी।। हो जिनवर..

पुष्करार्द्ध पूरब में मेरु, मन्दर नाम बताया।
जिनबिम्बों से युक्त जिनालय, कि है अनुपम माया।। हो जिनवर..

पश्चिम पुष्करार्द्ध में मेरु, विद्युन्माली जानो।
रत्नमयी हैं 'विशद' जिनालय, धर्म के आलय मानो।। हो जिनवर..

* * *

lr bKw ZÝXrída Ûrn {dYmZ
H$m_nÊS>Zm

रचयिता :

परम पूज्य क्षमामूर्ति 108 आचार्य विशदसागरजी महाराज

lr ZÝXrída Ûm nyOZ

(स्थापना)

अष्टम द्वीप रहा नन्दीश्वर, अंजनगिरि है चारों ओर।
अंजन गिरि के चतुष्कोण पर, दधिमुख करते भाव विभोर।।
दधिमुख के द्वय बाह्य कोण पर, रतिकर पर्वत रहे महान्।
जिनके ऊपर जिन मंदिर में, शोभित होते हैं भगवान।।
बावन जिनगृह चतुर्दिशा में, शोभित होते महति महान्।
विशद हृदय में जिन बिम्बों का, भाव सहित करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह !अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(श्रृंगार छन्द)

नीर यह प्रासुक लिया महान्, श्रेष्ठ निर्मल है क्षीर समान।
शीघ्र हो जन्म जरा का नाश, करें हम शिव नगरी में वास।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुणगान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ यह चन्दन लिया अनूप, प्राप्त करने शुद्धात्म स्वरूप।
चरण में आये लेकर आश, शीघ्र हो भव आताप विनाश।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुणगान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल यह अक्षत हैं मनहार, चढ़ाते हम ये मंगलकार।
मिले अक्षय पद मुझे प्रधान, भावना पूर्ण करो भगवान।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुणगान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प यह लाये विविध प्रकार, चढ़ाते चरणों बारम्बार।
शीघ्र हो कामबाण विध्वंश, रहे न जिसका कोई अंश।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुणगान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस व्यंजन भर लाए थाल, चढ़ाते हम होके नत भाल।
हमारी होवे क्षुधा विनाश, शरण में आये बनकर दास।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुणगान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाकर लाए घृत का दीप, चढ़ाते प्रभु के चरण समीप।
हमारे मोह तिमिर का नाश, करो प्रभु सम्यक् ज्ञान प्रकाश।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुणगान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाई अष्ट गंध युक्त धूप, प्राप्त करने निज का स्वरूप।
हमारे हो कर्मों का नाश, मिले हमको शिवपुर का वास।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुणगान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म विध्वंशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल लाए यहाँ अनेक, चढ़ाते चरणों माथा टेक।
मोक्ष फल हमको करो प्रदान, प्रार्थना है मेरी भगवान।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुणगान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त करने हम सुपद अनर्घ्य, चढ़ाते अष्ट द्रव्य का अर्घ्य।
झुकाते हम चरणों में माथ, भावना पूरी कर दो नाथ।।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुणगान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– धारा देते हम यहाँ, विशद भाव के साथ।
मोक्ष महल का पथ मिले, चरण झुकाते माथ।।

शांतये शांतिधारा

वन्दन करते भाव से, पुष्पाञ्जलि ले हाथ।
शिवपथ पाने के लिए, हे प्रभु ! देना साथ।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– नन्दीश्वर शुभ द्वीप है, मंगलमयी महान्।
गाते हैं जयमाल हम, पाने पद निर्वाण।।

(शम्भू छन्द)

अष्टम द्वीप श्री नन्दीश्वर, महिमाशाली रहा महान्।
योजन एक सौ त्रेसठ कोटि, लाख चौरासी आभावान।।1।।
पर्व अढ़ाई में इन्द्रादि, पूजा करते मंगलकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।1।।

चतुर्दिशा में अंजनगिरियाँ, अंजन सम शोभित हैं चार।
अंजनगिरि की चतुर्दिशा में, दधिमुख पर्वत हैं शुभकार।।
दधिमुख के द्वय बाह्य कोण में, रतिकर दो हैं मंगलकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।2।।

योजन सहस्र चौरासी ऊँची, अंजनगिरियाँ चार समान।
दस हजार योजन के दधिमुख, रतिकर हैं इक योजनकार।।
कृष्ण श्वेत अरु लाल हैं क्रमशः, सभी ढोल सम गोलाकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।3।।

चतुर्दिशा में चार बावड़ी, एक लाख योजन चौकोर।
निर्मल जल से पूर्ण भरी हैं, फूल खिले हैं चारों ओर।।
एक लाख योजन के वन हैं, चतुर्दिशा में अपरम्पार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।4।।

एक दिशा में तेरह पर्वत, बावन होते चारों ओर।
स्वर्ण रत्नमय आभा वाले, करते मन को भाव विभोर।।
कलशा ध्वजा कंगूरे घण्टा, से शोभित मंदिर मनहार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।5।।

हैं प्रत्येक जिनालय में जिन, बिम्ब एक सौ आठ महान्।
नयन श्याम अरु श्वेत हैं नख मुख, लाल रंग के आभावान।।
श्याम रंग में भौंह केश हैं, वीतरागमय हैं अविकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।6।।

कोटी सूर्य चन्द्र भी जिनके, आगे पड़ते कांति विहीन।
दर्शन से सद् दर्शन पाकर, प्राणी होते ध्यानालीन।।
मानो बिन बोले ही सबको, शिक्षा देते भली प्रकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।7।।

दोहा- नन्दीश्वर शुभ द्वीप के, हैं जिनबिम्ब महान्।
विशद भाव से हम सभी, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- महिमाशाली श्रेष्ठ हैं, नन्दीश्वर जिन धाम।
जिनबिम्बों को भाव से, करते विशद प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

सोरठा- तेरह श्री जिनधाम, नन्दीश्वर के पूर्व दिश।
बारम्बार प्रणाम, विनय सहित पूजा करें।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

अष्टम द्वीप रहा नन्दीश्वर, अंजनगिरि है चारों ओर।
अंजन गिरि के चतुष्कोण पर, दधिमुख करते भाव विभोर।।
दधिमुख के द्वय बाह्य कोण पर, रतिकर पर्वत रहे महान्।
जिनके ऊपर जिन मंदिर में, शोभित होते हैं भगवान।।

बावन जिनगृह चतुर्दिशा में, शोभित होते महति महान्।
विशद हृदय में जिन बिम्बों का, भाव सहित करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह !अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पूर्व दिशा के 13 जिनालय

(छंद - जोगीराशा)

जिन चरणों की अर्चा से कई, होते हैं अतिशय।
पूर्व दिशा में अंजनगिरि पर, श्री जिन चैत्यालय।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा हम करते।
विशद भाव से जिन चरणों में, अपना सिर धरते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् अंजनगिरिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि की चतुर्दिशा में, चार वापिकाएँ।
एक लाख योजन जलपूरित, अति शोभा पाएँ।।
पूर्व दिशा में नन्दा वापी, पर दधिमुख सोहे।
अकृत्रिम जिनबिम्ब अठोत्तर, शत् मन को मोहे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदावापिकामध्य पूर्व दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दा वापि के ईशान में, रतिकर गिरि जानो।
जिस पर जिन चैत्यालय जिन युत, शाश्वत शुभ मानो।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदावापीईशानकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दा वापि के आग्नेय में, रतिकर शुभ जानो।
जिन चैत्यालय जिस पर जिन युत, शाश्वत शुभ मानो।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदावापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण नन्दावति वापी में, दधिमुख शुभ जानो।
जिन चैत्यालय पूजनीय शुभ, शाश्वत है मानो।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदावतीवापिकामध्य दक्षिण दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आग्नेय में नन्दावति वापि, के रतिकर सोहें।
रत्नमयी जिनबिम्ब शोभते, सब का मन मोहें।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदावतीवापिआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दावति नैऋत्य कोण में, रतिकर शुभ गाया।
त्रिभुवन पूज्य जिनालय जिस पर, शाश्वत बतलाया।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदावतीवापिनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री लघु नन्दीश्वर द्वीप विधान

पश्चिम में नन्दोत्तरा वापी, में दधिमुख जानो।
रत्नों के जिनबिम्ब मनोहर, जिन गृह भी मानो।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदोत्तरावापिकामध्य पश्चिम दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नैऋत्य कोण नन्दोत्तरा वापि, के रतिकर सोहें।
जिन चैत्यालय और चैत्य शुभ, सबका मन मोहें।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदोत्तरावापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दोत्तरा वापि वायव्य में, रतिकर शुभ गाए।
जिन मंदिर के मध्य जिनेश्वर, जिसमें बतलाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए।।10।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नंदोत्तरावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर नन्दीघोषा वापि, में दधिमुख भाई।
जिन चैत्यालय में जिन पूजा, जानो सुखदाई।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए।।11।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नन्दीघोषावापिकामध्य उत्तर दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीघोषा के वायव्य में, रतिकर बतलाया।
अकृत्रिम जिन चैत्यालय शुभ, चैत्य युक्त गाया।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए।।12।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नन्दीघोषावायव्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीघोषा के ईशान में, रतिकर गिरि भाई।
जिस पर जिन चैत्यालय अनुपम, भविजन सुखदाई।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, अर्चा को लाए।
कृत्रिम रचना करके हम भी, पूजा को आए।।13।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे नन्दीघोषा-ईशानकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिशा के 13 जिनालय

सोरठा- **हैं तेरह जिन गेह, नंदीश्वर दक्षिण दिशा।**
पूजें जो सस्नेह, वह पावें सुख-संपदा।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

अष्टम द्वीप रहा नन्दीश्वर, अंजनगिरि है चारों ओर।
अंजन गिरि के चतुष्कोण पर, दधिमुख करते भाव विभोर।।
दधिमुख के द्वय बाह्य कोण पर, रतिकर पर्वत रहे महान्।
जिनके ऊपर जिन मंदिर में, शोभित होते हैं भगवान।।
बावन जिनगृह चतुर्दिशा में, शोभित होते महति महान्।
विशद हृदय में जिन बिम्बों का, भाव सहित करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

दक्षिण दिश में नन्दीश्वर के, जिनगृह तेरह रहे महान्।
विनय सहित पूजा करने को, उनका हम करते गुणगान।।
दक्षिण दिश में अंजनगिरि शुभ, शोभित होती है मनहार।
जिस पर चैत्यालय प्रतिमाएँ, पूज रहे हम बारम्बार।।14।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी अंजनगिरिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरी के पूर्व दिशा में, अरजावापी है शुभकार।
दधिमुख पर्वत पर चैत्यालय, चैत्य शोभते मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार।।15।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी अरजावापिकामध्यपूर्वदधिमुखपर्वत जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरजा वापी जल से पूरित, जिसका कोण रहा ईशान।
रतिकर पर चैत्यालय अनुपम, जिसमें शोभित हैं भगवान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार।।16।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी अरजावापिकाईशानकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आग्नेय में अरजावापी, के रतिकर हैं मंगलकार।
जिन चैत्यालय जिस पर सोहें, शोभित होते हैं मनहार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार।।17।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी अरजावापिकाआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि के दक्षिण में शुभ, विरजा वापी रही महान्।
दधिमुख पर्वत पर चैत्यालय, में जिन का करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार।।18।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी विरजावापिकादक्षिणदधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विरजा वापी अग्नि कोण में, रतिकर पर्वत रहा विशेष।
जिन चैत्यालय जिस पर अनुपम, जहाँ विराजित श्री जिनेश।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार।।19।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी विरजावापिकाआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विरजा के नैऋत्य कोण में, रतिकर दूजा रहा महान्।
जिस पर जिनगृह में शोभित हैं, अकृत्रिम जिनबिम्ब प्रधान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार।।20।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी विरजावापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम में अंजनगिरि के शुभ, वापी रही अशोका नाम।
दधिमुख के ऊपर चैत्यालय, में जिनको हम करें प्रणाम।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार।।21।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी अशोकावापिकामध्य पश्चिम दधिमुखपर्वत जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी के नैऋत्य कोण में, रतिकर पर्वत सोहें लाल।
जिस पर चैत्यालय हैं अनुपम, शोभ रहे जिनबिम्ब विशाल।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार।।22।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी अशोकावापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी के वायव्य कोण में, रतिकर दूजा रहा महान्।
चैत्यालय में जिनबिम्बों की, महिमा कौन करे गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार।।23।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी अशोकावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि के उत्तर दिश में, दधिमुख पर्वत रहा विशाल।
वापी रही वीतशोक शुभ, जिन गृह पूजित रहे त्रिकाल।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार।।24।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी वीतशोकावापिकामध्य-उत्तरदधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम वीतशोक वापी का, कोण रहा वायव्य विशेष।
रतिकर पर चैत्यालय अनुपम, जिसमें शोभित हैं तीर्थेश।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार।।25।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी वीतशोकावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम वीतशोका वापी का, जिसका कोण रहा ईशान।
रतिकर गिरि पर जिन चैत्यालय, में शोभित हैं जिन भगवान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
विशद भाव से अर्चा करते, जिन चरणों में बारम्बार।।26।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशी वीतशोकवापिकाईशानकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिशा के 13 जिनालय

दोहा– **तेरह पश्चिम दिशा में, नंदीश्वर के धाम।**
जिन मंदिर अनुपम रहे, जिनको विशद प्रणाम।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

अष्टम द्वीप रहा नन्दीश्वर, अंजनगिरि है चारों ओर।
अंजन गिरि के चतुष्कोण पर, दधिमुख करते भाव विभोर।।
दधिमुख के द्वय बाह्य कोण पर, रतिकर पर्वत रहे महान्।
जिनके ऊपर जिन मंदिर में, शोभित होते हैं भगवान।।
बावन जिनगृह चतुर्दिशा में, शोभित होते महति महान्।
विशद हृदय में जिन बिम्बों का, भाव सहित करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह !अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नंदीश्वर की पश्चिम दिशा में, तेरह जिनगृह रहे प्रधान।
पूजा करते भक्ति भाव से, पाने हम निज का स्थान।।

कृष्ण वर्ण अंजनगिरि के शुभ, चैत्यालय को है वन्दन।
एक शतक वसु जिन प्रतिमाओं, को हम सादर करें नमन्।।27।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी अंजनगिरिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद-टप्पा)

विजया वापी दधिमुख पर्वत, दधि सम है भाई।
दश सहस्र योजन ऊँचाई, शाश्वत सुखदाई।।
जिनालय पूजों हो भाई।
एक शतक वसु जिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई-जिना0..।।28।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी अंजनगिरि विजयावापीमध्य पूर्व दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजया वापी के ईशान में, रतिकर है भाई।
एक सहस्र योजन ऊँचाई, शाश्वत सुखदाई।।
जिनालय पूजों हो भाई।
एक शतक वसु जिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई-जिना0..।।29।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी विजयावापीईशानकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आग्नेय में विजयावापी, के रतिकर भाई।
जिसके ऊपर जिन चैत्यालय, सोहें सुखदाई।।
जिनालय पूजों हो भाई।
एक शतक वसु जिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई-जिना0..।।30।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी विजयावापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि दक्षिण वापी के, वैजयन्ती भाई।
दधिमुख पर्वत से शोभित है, शाश्वत जो भाई।।

जिनालय पूजों हो भाई।

एक शतक वसु जिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई–जिना0.. ।।31 ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी अंजनगिरिवैजयंतीवापिका दक्षिण दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आग्नेय में वैजयन्ती शुभ, वापी के भाई।
रतिकर पर्वत पर जिनगृह शुभ, शाश्वत सुखदाई।।
जिनालय पूजों हो भाई।

एक शतक वसु जिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई–जिना0.. ।।32 ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी वैजयंतीवापिकाआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नैऋत्य कोण में वैजयन्ती शुभ, वापी के भाई।
जिनगृह रतिकर गिरि पर सोहें, भविजन सुखदाई।।
जिनालय पूजों हो भाई।

एक शतक वसु जिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई–जिना0.. ।।33 ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी वैजयंतीवापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि पश्चिम में वापी, है जयन्ति भाई।
दधिमुख पर्वत पर चैत्यालय, चैत्य श्रेष्ठ ध्यायी।।
जिनालय पूजों हो भाई।

एक शतक वसु जिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई–जिना0.. ।।34 ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी अंजनगिरिवैजयंतीवापिका पश्चिम दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी सजल वैजन्ती के, नैऋत्य कोण भाई।
रतिकर पर्वत पर जिनमंदिर, में प्रतिमा गाई।।

जिनालय पूजों हो भाई।

एक शतक वसु जिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई–जिना0.. ।।35 ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी वैजयंतीवापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ जयन्ती वापी के शुभ, वायव्य कोण भाई।
अकृत्रिम रतिकर पर्वत पर, मन्दिर सुखदाई।।
जिनालय पूजों हो भाई।

एक शतक वसु जिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई–जिना0.. ।।36 ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी वैजयंतीवापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्जनगिरि उत्तर में वापी, अपराजिता गाई।
इसमें दधिमुख पर्वत शाश्वत, मन्दिर सुखदाई।।
जिनालय पूजों हो भाई।

एक शतक वसु जिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई–जिना0.. ।।37 ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी अंजनगिरि अपराजितावापिका उत्तर दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराजिता वापी वायव्य में, रतिकर है भाई।
जिनगृह में प्रतिमाएँ अनुपम, सोहे सुखदाई।।
जिनालय पूजों हो भाई।

एक शतक वसु जिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई–जिना0.. ।।38 ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी अपराजितावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराजिता वापी ईशान में, रतिकर है भाई।
जिनगृह में प्रतिमाएँ पूजें, हृदय हर्षाई।।
जिनालय पूजों हो भाई।

एक शतक वसु जिन प्रतिमाएँ, पूज्य कहीं भाई–जिना0.. ।।39 ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशी अपराजितावापिकाईशानकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिशा के 13 जिनालय

दोहा- तेरह उत्तर दिशा में, नंदीश्वर के धाम।
जिन मंदिर अनुपम रहें, जिनको विशद प्रणाम।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

अष्टम द्वीप रहा नन्दीश्वर, अंजनगिरि है चारों ओर।
अंजन गिरि के चतुष्कोण पर, दधिमुख करते भाव विभोर।।
दधिमुख के द्वय बाह्य कोण पर, रतिकर पर्वत रहे महान्।
जिनके ऊपर जिन मंदिर में, शोभित होते हैं भगवान।।
बावन जिनगृह चतुर्दिशा में, शोभित होते महति महान्।
विशद हृदय में जिन बिम्बों का, भाव सहित करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह !अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

नन्दीश्वर उत्तर दिशा, में तेरह जिन धाम।
जिनबिम्बों को भाव से, करते विशद प्रणाम।।
अन्जनगिरि है मध्य में, कृष्ण वर्ण मनहार।
चैत्यालय जिनचैत्य हैं, जिस पर मंगलकार।।40।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी अंजनगिरिस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

अन्जनगिरि के पूरब जानो, रम्यावापी अनुपम मानो।
दधिमुख पर चैत्यालय भाई, हैं जिनबिम्ब पूज्य सुखदाई।।41।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी अंजनगिरिपूर्वरम्यावापीमध्य दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्यावापी कोण में भाई, दिशा श्रेष्ठ ईशान बताई।
रतिकर पर चैत्यालय गाये, तीन लोक में पूज्य बताए।।42।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी रम्यावापीईशानकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्यावापी कोण में जानो, आग्नेय में रतिकर मानो।
जिन प्रतिमाएँ हैं मनहारी, जिन चरणों में ढोक हमारी।।43।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी रम्यावापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्जनगिरि दक्षिण में भाई, रमणीय वापी सुखदाई।
दधिमुख पर चैत्यालय गाये, चैत्यलोक में पूज्य बताए।।44।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी अंजनगिरिदक्षिणदिक्रमणीयावापिकामध्य दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया वापी शुभ जानो, आग्नेय में रतिकर मानो।
शाश्वत जिसमें मन्दिर गाये, चैत्य पूज्य उनमें बतलाए।।45।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी अंजनगिरिपश्चिमदिक्रमणीयापिकामध्य दधिमुखपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया नैऋत्य में भाई, जिनगृह में रतिकर सुखदाई।
हैं जिनबिम्ब पूज्य मनहारी, तीन लोक में मंगलकारी।।46।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी रमणीयावापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीतिका छन्द)

वापिका सुप्रभा पश्चिम, दिशा अन्जनगिरि कही।
गिरी दधिमुख पे जिनालय, जिन की शुभ महिमा रही।।
तरण-तारण भव निवारण, लोक में जिनवर कहे।
अर्घ्य देते जिन चरण में, धर्म की गंगा बहे।।47।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी अंजनगिरि पश्चिम सुप्रभावापिकामध्येदधिमुख-पर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापिका शुभ सुप्रभा के, नैऋत्य में रतिकर कहा।
जैन मन्दिर में प्रभु जिन, देव का आसन रहा।।
तरण-तारण भव निवारण, लोक में जिनवर कहे।
अर्घ्य देते जिन चरण में, धर्म की गंगा बहे।।48।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी सुप्रभावापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रभा के कोण वायव्य, में गिरि रतिकर कही।
गिरि श्रेष्ठ सुन्दर जिनालय, की विशद महिमा रही।।
तरण-तारण भव निवारण, लोक में जिनवर कहे।
अर्घ्य देते जिन चरण में, धर्म की गंगा बहे।।49।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी सुप्रभावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वतोभद्रा में है वापी, गिरि अन्जन उत्तरम्।
बीच दधिमुख पर जिनालय, में श्री जिनवर परम।।
तरण-तारण भव निवारण, लोक में जिनवर कहे।
अर्घ्य देते जिन चरण में, धर्म की गंगा बहे।।50।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी अंजनगिरिउत्तरदिक्सर्वतोभद्रावापिका मध्य दधिमुखपर्वत जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वतोभद्रा है सुवापी, कोण वायव्य में कही।
अचल रतिकर पर जिनालय, बिम्ब की महिमा रही।।
तरण-तारण भव निवारण, लोक में जिनवर कहे।
अर्घ्य देते जिन चरण में, धर्म की गंगा बहे।।51।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी सर्वतोभद्रावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वतोभद्रा है सुवापी, श्रेष्ठ दिश ईशान में।
गिरि रतिकर पर जिनालय, जिन रहें मम ध्यान में।।
तरण-तारण भव निवारण, लोक में जिनवर कहे।
अर्घ्य देते जिन चरण में, धर्म की गंगा बहे।।52।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशी सर्वतोभद्रावापिकाईशानकोणे रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

चम्पक आम्र अशोक सप्तछद, शोभित होते वन में चार।
नन्दीश्वर की चतुर्दिशा में, बाबन जिन मंदिर शुभकार।।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, तेरह-तेरह का विस्तार।
एक सौ आठ बिम्ब प्रति मंदिर, के पद वन्दन बारम्बार।।53।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ पाँच हजार छह सौ सोलह जिनबिम्बेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपस्थद्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा- नंदीश्वर जिन गेह की, महिमा अपरम्पार।
गाते हम जयमालिका, मिले मोक्ष का द्वार।।

शम्भू छंद (आल्हा-तर्ज)

नन्दीश्वर सागर से वेष्टित, नन्दीश्वर है द्वीप महान्।
पृथ्वीतल को शोभित करता, अति रमणीय है शोभावान।।
शशिकर निकर समान सघन यश, चतुर्दिशा में फैल रहा।
भूमण्डल को व्याप्त किया है, कीर्ति फैली पूर्ण अहा।।1।।
अष्टम द्वीप रहा नन्दीश्वर, महा मनोहर मंगलकार।
पर्व अठाई में पूजन को, आवे जहाँ इन्द्र परिवार।।
एक दिशा में तेरह मन्दिर, उनका जानो यह विस्तार।
अंजनगिरि के मध्य में जानो, चार दिशा में वापी चार।।2।।
दधिमुख पर्वत चार दिशा में, जिनकी महिमा अपरम्पार।
क्षीरोदधि सम सुन्दर दिखते, अनुपम शाश्वत विस्मयकार।।
दधिमुख के दोनों कोणों पर, रतिकर होते दो शुभकार।
इस प्रकार इक दिशा में तेरह, पर्वत सुन्दर विस्मयकार।।3।।
अंजनगिरि है अंजन जैसा, काले रंग में महति महान्।
श्वेत रंग के दधिमुख जानो, श्रेष्ठ धवल हैं दधि समान।।
रतिकर लाल रंग के अनुपम, शोभित होते आभावान।
भाँति-भाँति के वृक्ष लताओं, से सज्जित हैं शोभावान।।4।।
सभी पर्वतों की चोटी पर, मंदिर बने हैं मंगलकार।
जिसमें प्रतिमाएँ हैं शाश्वत, अतिशयकारी अपरम्पार।।
प्रति जिनालय में प्रतिमाएँ, एक सौ आठ कहे जिनदेव।
रत्नमयी जिनबिम्ब जिनालय, पूजनीय जो रहे सदैव।।5।।
माह आषाढ़ कार्तिक फाल्गुन, शुक्ल पक्ष जब होय महान्।
तिथि अष्टमी से लेकर के, आठ दिनों करते गुणगान।।
शक्र इन्द्र को आदि करके, सभी इन्द्र आते हैं साथ।
भक्ति भाव से वन्दन करते, चरणों झुका रहे सब माथ।।6।।
चैत्यालयों में नन्दीश्वर के, प्रचुर दिव्य अक्षत शुभ गंध।

भाँति-भाँति के पुष्प लिए हैं, खेकर धूप होय आनन्द।।
उपमातीत सु जिन प्रतिमाएँ, सर्व जगत् में मंगलकार।
योग्य महामय नामक पूजा, करके नमन् करें शत् बार।।7।।
वर्णन क्या हम करें अलग से, इन्द्रादि करते अभिषेक।
चन्द्र समान पूर्णमासी के, यश फैले जग में कई एक।।
ऐसे अन्य इन्द्र कई आकर, सहयोग भाव धारण करते।
भक्ति का फल पाते हैं वह, कर्म कालिमा को हरते।।8।।
उज्ज्वल गुण से युक्त देवियाँ, उज्ज्वलता को मात करें।
मंगल द्रव्यों को धारण कर, भक्ति की बरसात करें।।
करें नृत्य अप्सराएँ मिलकर, अन्य देवगण रहे महान्।
देख रहे अभिषेक प्रभु का, भाव सहित करते गुणगान।।9।।
इन्द्रों द्वारा वैभव संयुत, पूजा होती महति महान्।
बृहस्पति वचनों से अपने, उसका न कर सकें बखान।।
उक्त महामह पूजन की शुभ, स्तुति करने हेतु प्रधान।
किस मानव की शक्ति है जो, उसका करे पूर्ण गुणगान।।10।।
चूर्ण सुगन्धित लेकर जिसने, पूजा की अभिषेक समेत।
हर्ष भाव से विकृत दृष्टि, हुई रहे फिर भी वह चेत।।
पूजा करके इन्द्र भाव से, होकर के भक्ति में लीन।
चैत्यालयों की नंदीश्वर के, करें परिक्रमा भाव से तीन।।11।।

दोहा- नन्दीश्वर शुभद्वीप का, वन्दन करें त्रियोग।
मुक्ति हो भव सिन्धु से, मिले मोक्ष का योग।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वरसंबंधी द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भक्ति की पुष्पाञ्जलि, हृदय सजाई नाथ।
'विशद' भक्ति से तव चरण, झुका रहे हम माथ।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

नन्दीश्वर की आरती

(तर्ज : शांति अपरम्पार है ..)

नन्दीश्वर अविराम है, बावन शुभ जिन धाम हैं,
जिन चरणों की आरति करके, करते विशद प्रणाम हैं।
प्रथम आरती अंजनगिरि की, चतुर्दिशा में सोहें जी-2
जिन चैत्यालय चैत्य हैं उन पर, सबके मन को मोहें जी-2
नन्दीश्वर....

अंजनगिरि के चतुर्दिशा में, बावड़िया शुभ जानो जी-2
स्वच्छ नीर से भरी हुई हैं, अतिशय कारी मानो जी।
नन्दीश्वर....

मध्य बावड़ी के हैं दधिमुख, अतिशय मंगलकारी जी-2
उनके ऊपर जिन चैत्यालय, प्रतिमाएँ मनहारी जी-2
नन्दीश्वर....

बावड़ियों के बाह्य कोण पर, रतिकर विस्यमकारी जी-2
उनके ऊपर जिन चैत्यालय, प्रतिमाएँ मनहारी जी-2
नन्दीश्वर....

शाश्वत जिनगृह जिनबिम्बों की, आरती करने आये हैं-2
'विशद' अर्चना के परोक्ष ही, हमने भाव बनाएँ हैं।
नन्दीश्वर....

प्रशस्ति

मध्य लोक के मध्य है, जम्बू द्वीप महान्।
उसके भी शुभ मध्य है, मेरु आलीशान।।
जम्बू द्वीप को घेरकर, फैला लवण समुद्र।
उसमें अन्तरद्वीप कई, बने हुए हैं क्षुद्र।।
लवण समुद्र को घेरकर, फैला चारों ओर।
द्वीप धातकी खण्ड शुभ, करता भाव-विभोर।।
पूरब-पश्चिम धातकी, उसके हैं दो भाग।
इष्वाकार पर्वत करे, द्वीप के दोय विभाग।।
द्वीप धातकी खण्ड भी, घेरे वलयाकार।
कालोदधि सागर जिसे, घेरे अपरम्पार।।
कालोदधि को घेरता, है पुष्करवर द्वीप।
मानुषोत्तर है मध्य में, गोला उच्च अतीव।।
सब क्षेत्रों के मध्य शुभ, मेरु कहे प्रधान।
चारों वन के मध्य शुभ, मंदिर रहे महान्।।
पञ्च मेरु पूजा तथा, लिखा गया विधान।
नन्दीश्वर शुभ दीप का, भी यह लिखा विधान।।
सर्व दोष प्रायश्चित्त भी, है विधान शुभकार।
दोषों से मुक्ति मिले, जीवन हो अविकार।।
कोटा शुभ संभाग में, हुआ पूर्ण यह काम।
गुरुवर का आशीष पा, मेरा है वश नाम।।
छठी कृष्ण वैसाख की, दिन है मंगलवार।
विक्रम सम्वत् बीस सौ, सड़सठ है शुभकार।।
वीर निर्वाण पच्चीस सौ, छत्तीस कहा महान्।
रचना कर जिनदेव का, किया विशद गुणगान।।
जिन पूजा करके सभी, पावें पुण्य सुयोग।
सुख-शांति सौभाग्य पा, पावें शिवसुख भोग।।

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंङ्क
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेङ्क
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क
in vkpk;Z izfr"Bk dk 'kqHk] nks gtkj lu~ ik¡p jgkA
rsjg Qjojh calr iapeh] cus xq# vkpk;Z vgkङ्क
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

-आस्था दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर